मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु

गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा ओ गजलपर आलेख

संकलन ओ संपादन

गजेन्द्र ठाकुर

आशीष अनचिन्हार

विदेह-प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका (विदेहwww.videha.co.in) पेटारसँ



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

विषय सूची

आलोचक गण

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु

गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा ओ गजलपर आलेख

संकलन ओ संपादन

गजेन्द्र ठाकुर

आशीष अनचिन्हार

संपादित वा कि स्वतंत्र कोनो रूपमे ई पोथी मैथिलीक पहिल एहन आलोचना-समालोचना-समीक्षाक पोथी अछि जैमे शुद्ध रूपसँ सभ किछु गजलपर केन्द्रित अछि। चूँकि ई गजल आलोचनापर पहिल पोथी अछि तँए ऐमे बहुत रास गलती भेल हेतै। पाठक ओ आन आलोचक सभसँ आग्रह जे ओकरा देखाबथि आ जैसँ आगू हम सभ एकरा सुधारि सकी।

गजलक समीक्षाशास्त्र

सभसँ पहिने हम ई स्पष्ट कए दी जे ई मात्र दिशा-निर्देश अछि आ सेहो जेना गजेन्द्र ठाकुर जी आन विधा सभ लेल देने छथिन्ह तेहने सन आ गजेन्द्रे ठाकुर जीक समीक्षा शास्त्र केर रूप अछि। आ एहिमे ओ दिशा निर्देश सभ अछि जे समय-समयपर गजेन्द्र ठाकुर जी गजल लेल फुटकर रूपें दैत रहलाह अछि एहिमे किछु शब्द हम अपनो दिसँ जोड़लहुँ अछि प्रसंगक हिसाबसँ------

1) सभसँ पहिने गजलक भाषा देखू। भाषा मने कहीँ एहन तँ नै छै की कोनो गजलकार स्वतंत्रता केर नामपर गजलमे हिन्दी भाषाक प्रयोग केने छथि। ऐठाम ई धेआन देबाक गप्प थिक जे जँ अपन भाषामे कोनो शब्द नै हो तँ ओकरा लेल जा सकैए।

2) भाषा देखलाक बाद व्याकरणपर आउ। व्याकरण मने रदीफ, काफिया आ बहर।

3) व्याकरण देखलाक बाद समान्य गजल दोष आ गजल विशेषताकेँ देखू।

4) गजल दोष आ गजल विशेषताकेँ देखला बाद भावनाकेँ देखू। ऐठाम हम ई मोन पाड़ए चाहब जे काव्य मात्र कागजपर लीखल शब्द नै हेबाक चाही बल्कि अपन जीवनक कर्मसँ अनुप्राणित हेबाक चाही। मने जँ केओ दलितकेँ सतबै छथि मुदा ओ अपन गजलमे दलितकेँ पूजा करै छथि तँ हमरा हिसाबेँ ई दूषित भावना भेल। ओना कहल जा सकैए जे आलोचक की समीक्षक तँ रचने पढ़ि कऽ समीक्षा करता ने। बात सही मुदा रचनाकारक सही-गलत कर्म नुकाएल नै रहै छै। तँए रचनाक संगे-संग कर्मक सेहो समीक्षा हेबाक चाही। एहिठाम मोन राखू जे हम एतए मात्र जीवन कर्म आ रचना कर्मक बीचक मात्र न्यूनतम फाँक दिस इशारा कऽ रहल छी। जखन कोनो लेखक अपन पहिल पत्नीकेँ त्यागि दोसर बियाह कऽ लैत अछि आ ओकर बाद स्त्रीक दुखपर रचना लिखैत अछि तखन लेखकक जीवनकर्म आ रचनाकर्मपर आलोचना

करब आवश्यक भऽ जाइत अछि। आन विषय लेल एहने बूझू। लेखक लेल आवश्यक नहि जे ओ हाथमे बंदूक उठा बार्डरपर जा लड़ाइ कइए कऽ वीर रसक रचना करत वा वेश्यागामी भऽ कऽ वेश्यापर रचना लिखत। मुदा ई अपेक्षा तँ राखले जा सकैए जे ओ अपन जीवनमे इमानदारी रखैत हो। खास कऽ ओहन रचनाकार जे कथ्य की भाव लेल अनेरे परेशान रहै छथि तिनकर रचनामे कर्मक सेहो समीक्षा हेबाक चाही। आलोचक की समीक्षक जासूस नै छथि तँए हमरो बूझल अछि जे सभ समय लोक रचनेक समीक्षा करता। रचनाक संग कर्मक नै। ओना हमरा विश्वास अछि जे जहिया आलोचक रचनाक संगे-संग कर्मक आलोचना करता तहियासँ फेरो कविकर्म महान भऽ जाएत। किछु लोक विदेशी लेखकक जीवन केर उदाहरण दै छथि। मुदा धेआन देबाक गप्प ई जे भारत जकाँ विदेशमे लेखक अपनाकेँ खाली लिखबाक कारणे महान नै मानै छथि। ओ विदेशी लेखक सदिखन अपनाकेँ साधारण आदमी बूझि लिखैत अछि आ बेबहारो करैत अछि। मुदा भारतमे एकटा दुमसियो बच्चा एक पाँतिक कविता लीखत तँ ओ अपनाकेँ महान बूझए लागैए तखन तँ कर्म आ लेखन बीचक फाँक उघाड़ हेबे करत संगे-संग आलोचना सेहो हेबे करत। ईहो स्पष्ट करब जरूरी जे हिंदू धर्ममे कर्मकेँ मरलाक बादो प्रधानता देल गेल छै तँइ लेखककेँ मरलाक बादो हुनकर कर्मकेँ समीक्षा हेबाक चाही। आ गंभीर रूपसँ हेबाक चाही तखने दोसर लेखक सभहँक रचना ओ जीवन कर्मक बीच संतुलन एतै। जइ लेखक केर रचना ओ कर्मक बीच जते कम फाँक रहत ओ लेखक आ ओकर रचना ओतबे महान। किछु लोक कहि सकै छथि जे साहित्यिक लेखन आ धार्मिक लेखनमे अंतर होइत छै तँइ साहित्यिक लेखन लेल कर्मक संग ताल-मेल जरूरी नै मुदा हमरा हिसाबें ई कुतर्क थिक कारण कोनो प्रकारक लेखन कि कला समाजकेँ प्रभावित करै छै तँइ लेखक-कलाकारक जीवन-लेखन-कलामे ताल-मेल रहब जरूरी छै। एहिठाम फेर मोन राखू जे हम एतए मात्र जीवन कर्म आ रचना कर्मक बीचक मात्र न्यूनतम फाँक दिस इशारा कऽ रहल छी। एहिठाम ईहो प्रश्न उठि सकैए जे जखन साहित्यकार समाज अपन आलचोना बरदास्त नै करै छथि तखन आन

प्रोफेशनक लोककेँ साहित्यकार किए आलोचना करै छै। भारतमे सभसँ बेसी काज पुलिस प्रोफेशन केर लोक करै छै मुदा साहित्यकार ओकरा सदा घूसखोर कहि आलोचना करै छै। तेनाहिते आनो प्रोफेशनक लोकपर साहित्यकारक नजरि रहै छै मुदा अपना बेरमे ओ सभ सुविधा चाहै छथि जे साहित्यकारक काज उपदेश बला नै छै। या तँ साहित्यकार अपन आलोचना लेल कृतिक संगे कर्मो राखथि या आन प्रोफेशन बला लोकक आलोचना छोड़ि देथि।

आब एक बेर गजल आलोचनाक भाषापर बात कऽ ली। देखल जाइए जे आलोचक आलोचनामे कोनो दोष वा कोनो गलत प्रवृति लीखै छथि तखन ओ "अन्य पुरुष" बला भाषामे आलोचना लिखै छथि मने बातकेँ एतेक घुमा-फिरा कऽ जइसँ ई पता नै चलै जे किनकर दोषक विवरण छै। ई खराप लक्षण। एहन भाषामे आलोचना करए बला या तँ साहसी नै छथि या कोनो लोभ-लाभसँ ग्रस्त छथि तँइ खुलि कऽ नाम सहित नै लीखि पाबै छथि। हमरा हिसाबें ई गलत परंपरा अछि। जँ कोनो रचनामे दोष छै तँ रचनाकारक नाम सहित ओइपर बहस हेबाक चाही। जँ नै तखन आलोचना-समीक्षा लिखबे नै करू। आजुक गजल तँ अपन कथ्यमे सपाट भेल जाइए मुदा आलोचना घुमावदार। जखन गजलक भाषाकेँ घुमादावर हेबाक चाही आ आलोचनाक भाषा सपाट।

साहित्यमे सच ओ साहस तँ हेबाके चाही। मुदा दिक्कत ई जे एहि सच ओ साहसकेँ नपबाक एखन धरि कोनो मापदंड नै अछि। एहि लेल हम एकटा नव फर्मूला (सूत्र) दऽ रहल छी। ई सूत्र मात्र गजल नै हरेक विधाक रचना लेल समान रूपसँ काज करत। हमर एहि सूत्र लेल तीन टा तत्व रहत, पहिल) जँ रचना व्यक्ति केंद्रित अछि, दोसर) जँ रचना कोनो विषय केंद्रित अछि, तेसर) जँ रचना तथ्य केंद्रित अछि। आब एहि तीनू तत्वकेँ फरिछाबैत छी-

अ) व्यक्ति केंद्रित रचना केर दू भाग भेल पहिल समकालीन व्यक्ति आ दोसर पूर्वज। समकालीन मने जे लेखन कालमे आ ओकर बादो जिंदा छथि। जँ रचना समकालीन व्यक्ति केंद्रित छै तखन ई देखल जेबाक चाही जे लीखए बला लेखक आ जकरापर लीखल गेल छै तकर दूरी कतेक छै, दूरी मतलब प्रभाव पड़बाक संदर्भमे। कम दूरी बला लेखक

बेसी दुर्दशा भोगत आ बेसी दूरी बला दुर्दशा नै भोगत। उदाहरण दैत छी मानि लिअ लेखक लिखलाह जे यूक्रेनपर हमला अमानवीय छै आ पुतिन खलनायक अछि। आब सोचियौ जे एहि प्रकारक रचनासँ पुतिनकेँ की फर्क पड़तै? किछु नै। लेखक तँ ई लीखि अपनाकेँ साहसी साबित करबा लेला। मुदा जखन पुतिनपर लीखए बला वएह लेखक लिखता जे वीणा ठाकुर वा कि अशोक अविचल केर समयमे खराप पोथी चूनल गेलै तँ लेखक अकादेमीसँ बहिष्कृत कऽ देल जेता कारण एहिमे कम दूरी छै। एकर दोसर उदाहरण अछि हरेक ठाम पत्रकारक हत्या। एहन हत्या बिहारोमे भेल छै। किएक? एकर एक मात्र कारण छै जे पत्रकारक जे सच छलै आ जकरापर लीखल गेल रहै तकर दूरी कम रहै। ओही ठाम दक्षिण आ महाराष्ट्रमे किछु लेखक केर सेहो हत्या भेलै। बिहारमे एकौटा लेखक केर हत्या नै भेलै आ ओहिमे मैथिली केर लेखक सेहो अछि। तँ जाहि रचनामे लेखक ओ जकरापर लीखल गेल छै ओहिमे जँ दूरी कम छै तँ लेखककेँ साहसी ओ सच लीखए बला मानल जेबाक चाही, आ जँ दूरी बहुत छै तँ ओकरा मात्र भाँज पुरा लेब मानल जेबाक चाही। जँ कोनो लेखक अपन पूर्वजपर लीखि रहल छथि तँ जँ ओ प्रमाण दऽ कऽ लीखै छथि तँ हुनका साहसी ओ सच लीखए बला मानल जेतनि।

आ) जँ रचना विषय केंद्रित छै-- जँ कोनो लेखक अपन भाषामे अप्रचलित विषय वा विधाकेँ प्रमाणिक ओ लोकप्रिय बना देलकै तँ ओकरा साहसी मानल जेबाक चाही। जँ ओ ओहिमे तथ्य राखि देकलै तँ ओकरा सच लीखए बला सेहो मानल जेबाक चाही।

इ) जँ रचना तथ्य केंद्रित अछि-- एहि कोटिमे प्रमाण ओ असल नाम दूनू महत्वपूर्ण छै। जँ एकौटा गाएब तँ साहस ओ सच केर अभाव मानल जाएत।

ई तत्व सभ लेखन केर हरेम माध्यम जेना प्रिंट, इंटरनेट आदि लेल समान रूपसँ लागू अछि। संगे-संग रचनामे कथित मानवतावाद नपबाक लेल इएह सूत्र काज करत।

गजल समीक्षा करैत काल समीक्षक सभ एहि फार्मूलाक उपयोग करैत गजलमे कोनो गजलकार द्वारा दावा कएल सच-साहसकेँ जानि सकै

छथि। ओना फेसबुकपर मजाके-मजाकमे हम एहि सूत्रकेँ अपने नामपर "अनचिन्हार फर्मूला" देलहुँ मुदा पाठक एकर जे नाम देबए चाहथि से दऽ सकै छथि। ऐ किछु समान्य निर्देशक संग हम एकरा विराम दए रहल छी। अहाँ सभ लग जँ कोनो आर गप्प हुअए सूचित कएल जाए।- **आशीष अनचिन्हार**

ऐ पोथीकेँ पढ़ैत काल ईहो बात सभ मोनमे राखू

1) पहिल जे ऐ पोथीकमे बहुत रास एहनो आलेख सभ अछि जे की विदेहक आन-आन अंक ओ अनचिन्हार आखरपर प्रकाशित भ' चुकल अछि। मुदा हम सभ एकरा ऐठाँ मात्र ऐ उद्येश्यसँ देलहु जे पाठक लग एकै संगे एहन सूचना भेटै जे की गजलक समान्य गप्प बुझबा लेल आन ठाम नै बौआए पड़ै। जँ मात्र नवे आलेख हम सभ दितिऐ तँ बहुत संभव जे बहुत रास जानकारी ऐ विशेषांक नै आबि सकैत। मुदा आब हमरा सभक ई विश्वास अछि जे गजल परहँक प्रायः-प्रायः सभ जानकारी एक संगे पाठककेँ भेटतन्हि ऐ प्रयासमे हमरा लोकनि कते सफल छी से मात्र पाठक कहि सकै छथि।
2) ऐ पोथीकेँ पढ़ैत काल बहुत बेर पाठककेँ ई लगतन्हि जे बहुत रास तथ्य दोहराओल गेल छै। पाठककेँ ईहो लगतन्हि जे सभ आलोचक मात्र एकै पक्ष वा तथ्यकेँ बारेमे घोंघाउज कए रहल छथि। ऐ संदर्भमे हमर सभक अनुभव अछि जे ई मात्र ऐ दुआरे भ' रहल छै कारण गजल विषयपर पहिल बेर एते मात्रामे आलोचना-समीक्षा-समालोचना एकै ठाम प्रस्तुत कएल गेल छै तँ ऐ तरहँक दोहराव संभव। ऐ पोथीकेँ पढ़ैत काल अहाँकेँ बहुत रास दुर्गंधयुक्त वस्तुक खुलल पोल देखबामे भेटत। कतौ गुंटबंदीक पोल खुजैत भेटत तँ कतौ इतिहासमे पहिल बनबाक सौखकेँ देखार करैत लेख भेटत। ऐ प्रश्नक उत्तर भेटत जे किएक गजलक परिदृश्यसँ बाबा बैद्यनाथ गाएब रहला। किएक बिना व्याकरणक गजल रहितों ऐ क्षेत्रमे लोक कम्मे आएल। जखन की जै विधाक नियम टूटल हो तैमे बेसी लोक अबै छै (जेना कविता) मुदा ई गजलक संग किएक नै भेल... एहूपर विचार भेटत।
3) किछु नव आलोचक सभकेँ रोयाल्टी लेबाक इच्छा छलनि आ हमरा लोकनि देबामे असमर्थ। अंततः हुनकर सभहँक आलोचनाकेँ हटा क' ऐ समस्याक निवारण केलहुँ।
4) ऐ पोथीमे भाषाक पूर्ण ओ अपूर्ण दूनू रूप प्रयोग भेल अछि संगे-संग अइ पोथीक सभ अक्षर-संयोजन भिन्न-भिन्न कंप्यूटरपर भेल अछि। आ फोंटक विभिन्नताक कारणें कतहुँ-कतहुँ संयुक्ताक्षर मूल रूपमे

भेटत। संगे-संग लेखक केर मूल वर्तनीकेँ यथावत् रखबाक प्रयास भेल अछि।

5) एहि पोथीमे संपादक द्वय द्वारा लिखल कोनो आलोचना नै भेटत कारण हमरा लोकनि अपन आलोचनाकेँ स्वतंत्र रूपसँ देलहुँ अछि। गजेन्द्र ठाकुरक गजल संबंधी आलोचना "मैथिली समीक्षा शास्त्र" नामक पोथीमे भेटत तँ आशीष अनचिन्हारक सभ आलोचना "शब्द-अर्थ-शक्ति" नामक पोथीमे स्वतंत्र रूपसँ भेटत। दूनू पोथीक नामपर क्लिक करबै तँ दूनू पोथी खुजि जाएत।

6) एहि संग्रहमे आएल सभ लेखक परंपरागत अर्थमे आलोचक नै छथि मुदा आलोचनाक जे धर्म छै से ई सभ खूब निमाहला अछि। बहुत संभव जे परंपरागत वा एकेडमिक आलोचक सभकेँ एहि पोथीमेसँ कोनो वस्तु नै भेटनि।

आलोचक गण

1) ओम प्रकाश झा
2) अमित मिश्र
3) जगदानंद झा मनु
4) जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल
5) मुन्नाजी

ओम प्रकाश झा

1

बहुरूपिया रचनामे

गजलमे हम रूचि राखैत छी। संगहि मैथिली मे थोड बहुत गजल सेहो लिखै छी आ गजलक पोथी सब पढबाक इच्छा रहै ए। मैथिलीमे बहुत कम गजल संग्रह अछि आ ओहो सुलभ नै होइत रहै ए। एहन परिस्थितिमे हमरा श्री अरविन्द ठाकुरजीक सद्यः प्रकाशित मैथिली गजल संग्रह "बहुरूपिया प्रदेशमे" पढबाक अवसर भेंटल आ हम एहि पोथीकेँ आद्योपान्त पढलहुँ। सबसे पहिने हम श्री अरविन्द ठाकुरजीकेँ मैथिली गजलक पोथी लिखबाक लेल बधाई दैत छियैन्हि। मैथिली गजलक उत्थान लेल प्रत्येक डेग हमरा महत्वपूर्ण लागै ए। पोथीक गेट अप बड्ड सुन्नर अछि। टाईप आ कागतक कोटि सेहो उत्तम अछि। पोथीक भूमिका गजलकार अपने लिखने छथि आ ओहि मे गजल आ एहि संग्रहक सम्बन्ध मे बहुत रास गप सब कहने छथि। जेना पृष्ठ संख्या सातक दोसर पारा मे गजलकार कहैत छथि जे "मैथिलीक मिजाजक सीमा (इ मैथिलीक नहि, हमर अपन सीमा भऽ सकैत अछि) केँ देखैत गजलक व्याकरण (रदीफ, काफिया, मिसरा, मतला, मकता आदि)क स्थापित मापदंडक कसबट्टी पर हमर सभ गजल खरा उतरत तकर दाबी तऽ नहिए टा अछि बल्कि हम तँ इ सकारय चाहै छी जे----------------------------------- हमर सीमाक कारणेँ प्रस्तुत गजल मे कएक जगह सुधि पाठक लोकनि केँ त्रुटि भेटि सकैत छनि।" एहि पाराक अन्त मे ओ कहै छथि जे बहरक दोख किछु शेर मे भेटि सकैत अछि। हम गजलकारक सराहना करैत छी जे ओ भूमिका मे अपने कएक ठाम बहरक आ आन दोख हएब स्वीकार कएने छथि। पोथी केँ आद्योपान्त पढला पर हमरा इ नै बुझाएल जे एहि संग्रहक गजल सब कोन-कोन बहर मे लिखल गेल अछि। अरबीक कोनो टा बहर मे कोनो गजल नहिए अछि, मैथिली मे आइ-काल्हि प्रयुक्त होइ बला सरल वार्णिक बहर मे सेहो कोनो गजल नै अछि। गजलकार केँ प्रत्येक गजल मे इ लिखबाक चाही छल जे कोन बहर मे गजल लिखल गेल अछि। जँ

इ "आजाद-गजल"क संग्रह थीक, तँ हुनका एहि बातक उल्लेख करबाक चाही छल। भूमिकाक उपरोक्त पाराक शुरू मे गजलकार कहै छथि जे मैथिलीक मिजाज कैँ देखैत एहि मे उर्दू-हिन्दी गजलक मिजाजक नकल करबाक प्रयास कएल जाइत तँ एकरा बुधियारी नहिए टा कहल जायत आओर सफलता सेहो नहि भेंटत। हम हुनकर गप सँ सहमत छी जे नकल करब उचित नहि। मुदा एकटा गप हम कहऽ चाहैत छी जे प्रत्येक विधाक एकटा नियम होइत छै आओर जाहि क्षेत्र मे ओहि विधाक उदय भेल रहैत छै ओहि क्षेत्र मे स्थापित भेल नियमक पालन केने बिना कोनो रचना मूल विधा मे कोना भऽ सकैत अछि। जेना मैथिली मे समदाउन आ सोहरक परम्परा छैक आ जँ पंजाबी मे वा गुजराती मे वा की कोनो आन भाषा मे समदाउन आ सोहर गाबऽ चाही तँ नियम कोना बदलि जेतैक। जँ नियम बदलतै तँ ओ दोसर चीज भऽ जेतैक। तहिना गजल अरब क्षेत्र मे जन्म लेलक आ इ स्वाभाविक छै जे एकर नियम (व्याकरण) ओहि क्षेत्रक स्थापित मानदण्डक आधार पर बनल। स्थापित मानदण्डक पालन करब नकल नहि कहल जा सकैत अछि। आ जे नकलक गप करी तँ 'गजल' कहब अरबी-हिन्दीक नकल थीक। एक दिस गजलकार 'गजल' कहबाक लोभ नै छोडि रहल छथि आ दोसर दिस गजलक व्याकरणक नियम पालन कैँ नकल कहै छथि, इ उचित नै बुझाएल। गजल स्थापित मानदण्ड पर जँ नै कहल गेल तँ रचना कैँ गजलक स्थान पर दोसर नाम देल जा सकैत अछि।

पृष्ठ संख्या दस पर दोसर पारा मे गजलकार कहै छथि जे ओ जीवन सँ सिदहा लैत छथि। इ स्वागत योग्य गप भेल। जीवनक सिदहा सँ तैयार व्यंजन सोअदगर हेबे करतै। मुदा भोजन बनबै काल चाउरक सिदहा पानि मे सोझे फुला कऽ परसि देला सँ भात नहि कहाइत अछि। चाउरक सिदहा कैँ अदहन मे देल जाइ छै तखन भात तैयार होइ छै। तहिना जीवनक सिदहा जँ व्याकरण, नियम आ चिन्तन-मननक अदहन मे पकाओल जाइत अछि तँ सोअदगर रचना भेटैत अछि। विधा विशेषक मापदण्ड तोडबाक क्रांतिकारी घोषणा कएला टा सँ किछु विशेष फायदा वा उमेद तँ नहिए जगै ए। जँ कियो मापदण्ड तोडै छथि,

तँ मापदण्ड पर चलै बला कैँ नकलची आ बाजीगर कहब उचित नहि। गजल आ फकरा आ दोहा मे थोडेक अन्तर तँ छै जे रहबे करतै। अस्तु, इ गजलकारक अपन विचार छैन्हि आ आब प्रकाशित सेहो छैन्हि। गजल संग्रहक सब गजल पढलौं। विषय वस्तु सब नीके लागल। गजलक व्याकरणक आधार पर कहि सकैत छी जे बहरक दोख तँ प्रत्येक गजल मे छैक आ जँ इ आजाद-गजलक संग्रह थीक तँ गजलकार इ गप कतौ नै कहने छथि। गजलकार कैँ स्पष्ट करबाक चाही छल जे कोन कोन बहर मे गजल सब लिखल गेल अछि। हमरा बुझने गजलक कोनो शीर्षक नै होइत अछि, मुदा प्रत्येक गजल कैँ एकटा शीर्षक देल गेल अछि। बहरक अतिरिक्त रदीफ आ काफियाक नियमक सेहो कएक ठाम पालन नै भेल अछि आ इ गप गजलकार भूमिका मे सेहो स्वीकार कएने छथि। जेना पृष्ठ बाईस मे मतलाक दुनू पाँति, दोसर शेर आ पाँचम शेर मे काफिया मे 'आयब' प्रयोग भेल अछि, तँ दोसर आ चारिम शेर मे 'अब' क प्रयोग अछि। पृष्ठ चौबीस मे मतलाक पहिल पाँति मे काफिया मे 'अ' आयल अछि आ दोसर पाँति आ अन्य शेर मे 'आत' आयल अछि। पृष्ठ पच्चीस मे काफिया की छै, से नै बुझाएल। पृष्ठ तिरपन मे प्रत्येक पाँति मे काफिया एकदम फराक फराक अछि। पृष्ठ अनठाबन मे मतला, दोसर शेर आ चारिम शेर मे काफिया मे 'अल' प्रयुक्त अछि आ आन सब शेर मे काफिया मे 'अ' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ उनसठि मे सेहो रदीफ आ काफियाक स्पष्टता नै अछि। पृष्ठ छियासठि मे काफिया मे कतौ 'अल' आ कतौ 'आओल' प्रयुक्त अछि। पृष्ठ सडसठि आ तिहत्तरि मे सेहो काफियाक नियमक उल्लंघन भेल अछि। तहिना संयुक्ताक्षर बला काफियाक नियम सेहो एक दू ठाम हमरा हिसाबेँ ठीक नै अछि। एकर अतिरिक्त आओर कएक ठाम काफियाक नियमक पालन नै भेल अछि। हम उदाहरण स्वरूप किछु पृष्ठक उल्लेख कएलहुँ। हमर इ उद्देश्य नै अछि जे खाली दोख ताकल जाय, मुदा जँ गजल कहै छियै तँ गजलक नियमक पालन हेबाक चाही। सब गोटे कैँ जानकारी लेल इ बता दी की बिना रदीफक गजल तँ भऽ सकैत अछि, मुदा बिना दुरूस्त काफिया भेने गजल नै भऽ सकैत अछि। भूमिका सँ एकटा बात आर स्पष्ट होइ ए जे गजलकार

मई 2008 सँ मैथिली मे गजल लिखब शुरू केलथि, ओना ओ हिन्दी मे पहिनहुँ गजल लिखैत छलाह। एकर मतलब इ भेल जे गजलकार "अनचिन्हार आखर" (मैथिली गजल कैँ समर्पित ब्लाग) सँ बहुत बाद मे मैथिली गजल लिखब शुरू कएने छथि आ मैथिली गजलक वरीयता मे बहुत बाद मे आयल छथि। "अनचिन्हार आखर" ब्लाग देखला सँ पता चलै छै जे गजलकार एहि ब्लाग पर सेहो अपन कएक टा गजल 2009 सँ एखन धरि देने छथि। ओ "अनचिन्हार आखर" ब्लाग सँ चिन्हार छथि, तैँ इ उमेद अछि जे एहि ब्लाग पर प्रकाशित मैथिली गजलक विस्तृत व्याकरण कैँ जरूर देखने हेताह। इ उमेद छल जे प्रस्तुत गजल संग्रह मैथिली गजलक नब पीढी लेल एकटा उदाहरण बनत। मुदा एहि संग्रह मे गजलक व्याकरणक जे उपेक्षा भेल अछि, जे गजलकार भूमिका मे स्वयं स्वीकार कएने छथि, निराशा उत्पन्न करैत अछि। मुदा इ संग्रह गजलकारक पहिलुक मैथिली गजल संग्रह अछि, तैँ गजलक व्याकरणक गलती भेनाई स्वभाविक अछि। आशा व्यक्त करै छी जे हुनकर आगामी गजल संग्रह मैथिली गजल मे अपन अलग स्थान राखत।

2

घोघ उठबैत गजल

मैथिली गजलक पहिलुक प्रकाशित पोथी "उठा रहल घोघ तिमिर" पढबाक सौभाग्य भेंटल। ऐ गजल संग्रहक गजलकार श्री विभूति आनन्द छथि। एहि पोथी मे कुल चौंतीस गोट गजल अछि। पूरा पोथी कैँ एकहि बैसार मे पढि गेलहुँ आ बेर-बेर पढलहुँ। सबसे पहिने हम श्री विभूति आनन्दजी कैँ मैथिली गजलक पहिलुक संग्रह प्रकाशित करबा लेल धन्यवाद दैत छियैन्हि। एहि पोथीक भूमिका मे गजलकार कहै छथि जे "मैथिलीक गजल सोझे-सोझ हिन्दी सँ प्रभावित अछि मुदा हिन्दी जकाँ जमल नञि अछि एखनो धरि।" आगू हुनकर कहनाई छैन्हि- "पारम्परिक व्याकरण सम्बन्धित अगणित त्रुटि सभ ठाम लक्षित होएत। ओना हम दुस्साहसपूर्वक साहस करैत रहलहुँ अछि जे कथ्य-

सामंजस्य लए व्याकरण दिस सँ यदि मूँहो घूमा लेल जाए तँ कोनो हर्ज नञि। किए तँ हम मानैत छी जे ई पाठ्यक्रमक वस्तु नञि अछि। विद्यार्थी मूर्ख नञि बनत। तैं की ------------------------ व्याकरण सँ भयभीत भऽ नञि लिखल जाए।" गजलकारक पहिलुक कथनक सम्बन्ध मे हमर निवेदन अछि जे गजलक परम्परा अरबी-फारसी सँ शुरू भेल अछि आ ओतहि सँ आन भारतीय भाषा मे पसरल अछि। हिन्दी-उर्दू मे गजल कहबाक परम्परा मैथिली सँ पहिने शुरू भेल, तैं बहुसंख्य लोक दिग्भ्रमित भऽ जाइत छथि जे मैथिलीक गजल हिन्दी गजलक नकल छी वा ओइ सँ प्रभावित भेल अछि। गजलकार सेहो एहि मिथ्या धारणा सँ प्रभावित छथि। आब गजलक व्याकरण थोड-बहुत समन्जनक संग सब भाषा मे तँ एक्के रहत। ऐ स्थिति कैँ हमरा हिसाबेँ "प्रभावित भेनाई" कहबाक कोनो औचित्य नै अछि। गजलकारक दोसर कथन देखि हम निराश भेल छी। पता नै किया एखन धरि जे दुनू गजल संग्रह (सबसँ पहिलुक आ सबसँ अंतिम प्रकाशित) पढलहुँ, एहि दुनू मे गजलकार कथ्य-सामंजस्यक आगू व्याकरण कैँ कोनो मोजर नै देबऽ चाहैत छथि। एकटा गप मोन रखबाक चाही जे साहित्यक निर्माण वैयाकरणिक अनुशासनक बादे सफल भेल अछि। इ फराक गप अछि जे समय-काल आ स्थानक हिसाबेँ सर्वमान्य परिवर्तन व्याकरण मे होइत रहल छैक। बिना वैयाकरणिक अनुशासनक भाषा पढबा, लिखबा आ बाजबा जोग रहत? जिनका मे साहित्य निर्माणक माद्दा छैन्हि, हुनका मे व्याकरण कैँ पालनक साहस अबस्स हेबाक चाही।

आब हम एहि संग्रहक गजलक सम्बन्ध मे किछु गप कहऽ चाहब। इ गजल संग्रह ओहि समय मे लिखल गेल अछि जखन मैथिली गजलक व्याकरण आ बहरक सम्बन्ध मे बहुत बेसी जनतब सार्वजनिक नै छल। हम एकरा एना कहऽ चाहब जे इ गजल संग्रह "अनचिन्हार आखर" जुग सँ पूर्वक गजल अछि जखन बहर, रदीफ आ काफियाक नियमक पालनक विषय मे बहुत रास गप सर्वजन सुलभ नै छल। एहि हिसाबेँ जँ ऐ संग्रहक गजल सभ मे बहरक दोख छैक तँ इ स्वभाविक बुझाईत अछि। एहि संग्रहक कोनो टा गजल कोनो बहर मे नै अछि। तैं ऐ

संग्रहक वैध गजल (जाहि मे काफियाक नियमक पालन भेल हुए) सभ कैँ "आजाद-गजल"क श्रेणी मे राखल जा सकैए। आब गजलक काफिया आ रदीफक सम्बन्ध मे किछु गप। एहि संग्रहक बहुत रास गजल मे काफिया आ रदीफक नियमक पालन भेल अछि। मुदा कएक गजल मे रदीफ आ काफियाक गलती अछि। जेना पृष्ठ चौदह पर मतला देखला पर बुझाईत अछि जे "इ मौसम" रदीफ अछि आ "लागैए" आओर "उलाबैए" काफियायुक्त शब्द अछि। मुदा दोसर शेर आ आगूक आन शेर मे एकर पालन नै भेल अछि आओर शेर सभ बिना रदीफक "अ" काफियायुक्त अछि। पृष्ठ पन्द्रह पर सेहो यैह दोख अछि, जाहि मे मतला मे रदीफ "कहाँ रहल"क प्रयोग अछि आ आन शेर सभ बिना रदीफक "अल" काफियायुक्त अछि। एहने दोख पृष्ठ सोलह मे देखल जा सकैत अछि, जतय मतला मे "करै छह" रदीफ मानल जयबाक चाही। ओना ऐ गजलक आन शेर सभ मे दू टा काफियाक सुन्नर प्रयोग अछि, जे नीक लागैए। हमरा हिसाबेँ काफियाक दोख पृष्ठ बीस, बाईस, चौबीस, पचीस, अट्ठाईस, उनतीस(संयुक्ताक्षर काफियाक नियमक दोख), बत्तीस आ सैंतीस मे सेहो अछि। एकर सबहक विस्तृत वर्णन देब हम अपेक्षित नै बूझि रहल छी, कियाक तँ इ हमर उद्देश्य कथमपि नै अछि। गजल संग्रहक सब गजलक विषय-वस्तु नीक अछि आ गजलकार अपन भावना नीक जकाँ प्रकट केने छथि।
किछु गजलक काफिया आ रदीफक दोख जँ कात कऽ कऽ देखी, तँ इ गजल-संग्रह एकटा नीक गजल-संग्रह अछि। गजलकारक गजल कहबाक क्षमता सेहो नीक बुझाईत अछि। हमरा ई अचरज लागि रहल अछि जे ऐ संग्रहक बाद गजलकारक दोसर गजल-संग्रह किया नै आएल अछि। एकर कारण तँ गजलकारे कैँ पता हेतैन्हि, मुदा अपन अनुभवक आधार पर हम कहऽ चाहै छी जे श्री विभूति आनन्द नीक गजल लिख सकैत छथि। जँ बहरक विचार नै करी, तँ 2012 मे आएल श्री अरविन्द ठाकुरजीक गजल-संग्रह सँ करीब एकतीस बर्ख पहिने 1981 मे लिखल गेल एहि संग्रहक गजल सब उम्दा कहल जा सकैत अछि। एकर कारण इ जे एहि संग्रहक गजल सब मे काफियाक नियम-पालनक प्रतिशत वर्तमान समयक संग्रह सब सँ बेसी अछि। कथ्यक

मजबूती सेहो नीक कोटिक अछि। खाली कुहरल तुकमिलानी केने गजल नै कहल जा सकैत अछि, इ गप एहि संग्रह कैँ पढलाक बाद एखुनका गजलकार सभ कैँ सेहो बुझेतन्हि, इ आशा अछि। इहो एकटा अचरजक विषय अछि जे जखन मैथिली मे नीक गजल एतेक साल पहिनो कहल गेल छल, तखन एकर बाद गजलक विकास-यात्रा पचीस-तीस बर्ख धरि कतऽ आ किया ठमकि गेल। बीचक अवधि मे मैथिली गजलक विकासक धार मे बान्ह किया बनि गेल छल, इ विचारणीय गप अछि। ओना आब इ बान्ह टूटि रहल अछि आ आशाक नब जोति मे मैथिली गजलक घोघ उठि रहल अछि।

3

समीक्षा

विदेह ई-पत्रिकाक 1 अप्रैल 2012 केर नब अंक मे प्रकाशित श्री प्रेमचन्द्र पंकजजीक दू टा गजल पढलौं। एहि दूनू गजल कैँ हम गजलक व्याकरणक आधार पर देखबाक प्रयास कएलौं। हम दूनू गजल पर आ प्रत्येक पाँति पर अपन विचार राखि रहल छी।

गजल 1

हम बात अहीं केर मीत कहब, नहि गजल कहब
बरु कहब मीठ नहि, तीत कहब, नहि गजल कहब

चाङुर अपन पसारि रहल अछि माथापर सम्बन्धक बाज
कोन विधि बाँचत प्रीत कहब, नहि गजल कहब

कतबो माँटि सुँघाएब तैओ नहि मानब हम अप्पन हारि
चारु नाल पछाड़ि अपन हम जीत करब नहि गजल कहब

गगनक मुँहकेँ चूमए कतबो ठाढ़ अहाँ केर शीसमहल
बस कखनहुँ बालुक भीत करब नहि गजल कहब

हाथ पसारब रहत पसरले, मुँहे टेढ़ करब तँ की
कनि दूसि मुँह विपरीत चलब, नहि गजल कहब

पहिल गजलक मतला पढला पर बुझाइए जे रदीफ "कहब, नहि गजल कहब" अछि आ काफिया मे "ईत" प्रयोग भेल अछि। दोसर शेर मे यैह रदीफ आ काफिया लेल गेल अछि। मुदा तेसर आ चारिम शेर मे आबि कऽ रदीफक "कहब"क बदला मे "करब" उपयोग कएल गेल अछि। पाँचम शेर मे एकरा बदलि कऽ "चलब" कऽ देल गेल अछि। ऐ सँ इ बुझा लगैए जे रदीफ "नहि गजल कहब" अछि आ दू टा काफिया "ईत" युक्त शब्द आ "अब" युक्त शब्द अछि। जँ गजलकार यैह रदीफ आ काफिया मानि कऽ चलल छथि तँ हुनका प्रत्येक शेर मे एकरे प्रयोग करबाक चाही। तखन रदीफ आ काफियाक दोख नै रहितै। रदीफक नियमक मोताबिक प्रत्येक गजलक एकेटा रदीफ होइत अछि आ एकर पालन ओहि गजलक प्रत्येक शेर मे होयबाक चाही। तहिना काफियाक नियमक मोताबिक प्रत्येक शेर मे काफिया एके हेबाक चाही। आब कनी बहर पर चर्च करी। ई गजल सरल वार्णिक बहर वा वार्णिक बहर पर नै लिखल गेल अछि। अरबी बहर मे अछि की नै ई जनबा लेल हम सब एक एक टा पाँतिक विश्लेषण करी। जँ ह्रस्व केँ 1 आ दीर्घ केँ 2 मानी तँ पहिल शेर मे देखल जाओ:-
हम बात अहीं केर मीत कहब, नहि गजल कहब
11 21 12 21 21 111 11 111 111
आब दोसर पाँति
बरु कहब मीठ नहि, तीत कहब, नहि गजल कहब
12 111 21 11 21 111 11 111 111
ऊपर दूनू पाँति मे देखि सकै छी जे ह्रस्वक नीचा ह्रस्व आ दीर्घक नीचा दीर्घ नै आएल अछि आ तैं इ शेर कोनो बहर मे नै अछि। जखन मतले कोन बहर मे नै अछि, तखन आन शेर सब पर विचार करबाक कोनो

प्रयोजन नै अछि। निष्कर्ष यैह जे गजल कोनो बहर मे नै अछि। आन शेरक विश्लेषण पाठक अपने ऐ आधार पर कऽ सकैत छथि।
आब दोसर गजल देखल जाओः-
गजलक बहन्ने हम आंगन- घर- दुआरि लिखब
बाध-बन- कलमबाग-बेख –बसबारि लिखब

साँढ़ छैक छुट्टा आ पाड़ा मरखाह कतैक
बाँचल फसिलकेर सुरजाक रखबारि लिखब

थानामे नाङट भेलि रमियाक हाकरोस-
सुननिहार केओ नहि तकरे पुछारि लिखब

बारल खेलौनासँ, पोथीसँ दूर कएल
जिनगीक बोझ उघैत नेनाक भोकारि लिखब

नाचि रहल लोक आइ असली नचनिञा सभ
नचा रहल परदासँ केओ परतारि लिखब

फाटल अकास छै सीअत के-कते कोना
लिखब जे “पंकज” बेर-बेर विचारि लिखब
एहि गजल मे काफिया "आरि" युक्त अछि आ रदीफ "लिखब" अछि। ऐ हिसाबेँ रदीफ आ काफिया ठीक अछि। सरल वार्णिक बाहर वा वार्णिक बहर वा अरबी बहर मे इहो गजल नै अछि। ह्रस्व कैँ 1 आ दीर्घ कैँ 2 मानि कऽ मतला कैँ देखल जाओः-

गजलक बहन्ने हम आंगन- घर- दुआरि लिखब
1111 122 11 211 11 121 111
बाध-बन- कलमबाग-बेख –बसबारि लिखब
21 11 11121 21 1121 111
इहो गजलक मतला मे ह्रस्वक नीचा ह्रस्व आ दीर्घक नीचा दीर्घ नै

आएल अछि आ इ कोनो बहर मे नै अछि। इहो गजल मे जखन मतले बहर मे नै अछि तखन आन शेर सब पर विचार करबाक कोनो प्रयोजन नै अछि। एहि आधार पर इ निष्कर्ष निकलैए जे इहो गजल कोनो बहर मे नै अछि। एहि तरहेँ देखल जा सकैए जे दूनू गजलक बहर दुरूस्त नै छै। ऐठाँ ई बता दी की संयुक्ताक्षर सँ पूर्वक वर्ण दीर्घ मानल जाइए आ अनुस्वार बला वर्ण सेहो दीर्घ मानल जाइए।
गजलक विषयवस्तु नीक अछि। दोसर गजल "आजाद गजलक"क श्रेणी मे अछि आ पहिलुक गजल काफिया दोखक कारण गजल नै अछि। सादर।

4

मैथिली बाल गजलक अवधारणा

जेना कि नाम सँ स्पष्ट अछि, बाल गजल माने भेल नेना-भुटकाक लेल गजल। बाल गजलक अवधारणा मैथिली मे एकदम नब अछि आ पहिल बेर 24 मार्च 2012 केँ श्री आशीष अनचिन्हार ऐ अवधारणा केँ सामने आनलथि। बहुत अल्प समय मे बाल गजल बहुत प्रसिद्धि पओलक आ बाल गजल कहनिहार गजलकार सभक एकटा विशाल पाँति ठाढ भऽ गेल। ऐ मे सर्वश्री गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार जकाँ स्थापित गजलकार तँ छथि, एकर अलावे नब गजलकार सब सेहो बाल गजल कहबा मे विशेष अभिरूचि देखौलन्हि। बाल गजल कहनिहार नब गजलकार सभ मे सर्वश्री मिहिर झा, मुन्ना जी, इरा मल्लिक, अमित मिश्रा, चन्दन झा, पंकज चौधरी 'नवलश्री', राजीव रंजन झा, जगदानंद झा 'मनु', रूबी झा, प्रशांत मैथिल आदि अनेको गजलकार छथि। "अनचिन्हार आखर", जे मैथिली गजलक एकमात्र ब्लाग अछि, देखला पर पता लागैत अछि जे बाल गजलक अवधारणा अयलाक बाद सँ एखन धरि(ई आलेख लिखबा तक) 73(तिहत्तरि) टा बाल गजल ऐ ब्लाग पर पोस्ट भऽ चुकल अछि, जे अपने आप मे एकटा कीर्तिमान अछि। खास कऽ एतेक कम समय मे एतेक पोस्ट

आएब बाल गजलक लोकप्रियताक खिस्सा कहि रहल अछि। बाल गजलक विधा एकटा स्वतन्त्र विधा बनबाक बाट मे अग्रसर अछि, जे एतेक कम समय मे एतेक संख्या मे बाल गजल कहनिहार गजलकार आ बाल गजलक संख्या सँ स्पष्ट अछि। संगहि किछु लोक केँ मिरचाई सेहो लागब शुरू अछि आ ओ लोकनि बाल गजलक सम्पूर्ण अवधारणा केँ नकारबाक कुत्सित असफल प्रयास मे जत्र कुत्र अंट शंट पोस्ट देबऽ लागलाह। ई गप आर स्पष्ट करैत अछि जे बाल गजलक विधा मजबूती सँ स्थापित भऽ रहल अछि। कियाक तँ सफल व्यक्ति आ विधा सभक आकर्षणक केन्द्र बनैत अछि आ बाल गजल सेहो सभक आकर्षणक केन्द्र बनि चुकल अछि, चाहे ओ गजलकार होईथि, पाठक होईथि, आलोचक होईथि वा जरनिहार लोक सभ होईथि। जखन मैथिली गजलक चर्च भऽ रहल अछि, तखन श्री आशीष अनचिन्हारक चर्चा स्वभाविक अछि। मैथिली गजलक विकास मे हुनकर योगदान हुनकर धुर विरोधी लोकनि सेहो मानैत छथिन्ह। मैथिली बाल गजलक अवधारणा लेल श्री आशीष अनचिन्हार मैथिली साहित्य मे अपन अनुपम स्थान बना चुकल छथि। बाल गजलक अवधारणा सेहो हुनके छैन्हि, जे बहुत सफल भेल अछि।
आब किछु गप करी मैथिली बाल गजलक रचना सभक संबंध मे। हमरा विचार सँ बाल गजल नेना भुटकाक लेल रूचिगर तँ हेबाके चाही, संगहि ऐ मे कोनो स्पष्ट सामाजिक सनेस होइ तँ ई सोन मे सोहाग जकाँ हएत। ओना तँ सभ बाल गजल कहनिहार गजलकार सभ ऐ मे सक्षम छथि आ नीक सँ नीक बाल गजल लिख रहल छथि, मुदा ऐ सन्दर्भ मे हम श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक बाल गजलक उल्लेख करब उचित बूझि रहल छी। हुनकर एकटा बाल गजलक मतला अछिः-

कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी
जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बार्बी

ऐ गजल केँ पूरा पढि कऽ कने देखियौ। ई गजल कनिया पुतराक

उल्लेख करैत नेना-भुटकाक मनोरंजन तँ करिते अछि, संगहि अजुका बाजारवादक बलिवेदी पर कुर्बान भेल मनुक्खक मार्मिक विवेचना सेहो करैत अछि। एहन आरो कतेको बाल गजल सभ "अनचिन्हार आखर" पर भेंटैत अछि, जकरा ऐ ब्लाग पर पढल जा सकैत अछि। ई गजलकार सभक सामाजिक संवेदना कैँ प्रकट करैत अछि आ हम ऐ लेल सभ गजलकार कैँ साधुवाद दैत छियैन्हि। हम एहने बाल गजलक आस गजलकार सभ सँ लगओने छी। कियाक तँ गजलकारक सामाजिक दायित्व सेहो छै, जे पूरा हेबाक चाही। आधुनिक मैथिली गजलकार सब मे ई क्षमता अछि आ ओ दिन दूर नै अछि जखन एक सँ एक सुन्नर आ बालोपयोगीक संगे सामाजिक समस्या पर बाल गजलक भरमार हएत। व्याकरणक हिसाबेँ मैथिली बाल गजल नीक बाट धएने अछि। अनचिन्हार आखरक टीमक परिश्रमक कारणेँ मैथिली मे बहरयुक्त गजलक काल शुरू भऽ चुकल अछि आ सरल वार्णिक बहर(जकर अवधारणा श्री गजेन्द्र ठाकुरजी देलखिन्ह) केर अलावे आब अरबी बहर मे गजल कहनिहार गजलकारक कमी नै छै। बाल गजल अपन शुरूआते सँ बहरयुक्त अछि, जे बाल गजलक लेल शुभ संकेत अछि। शुरूआतिए समय मे जे आ जतबा बाल गजल लिखल गेल अछि, ओ सभ बहर मे अछि, चाहे सरल वार्णिक बहर होइ वा अरबी बहर। बहरक अलावे रदीफ आ काफियाक नियमक पालन सेहो पूरा पूरा भऽ रहल अछि। व्याकरण पालनक ई प्रतिबद्धता निश्चित रूपे बाल गजलक सफलताक गाथा लिखबा मे सहायक हएत।

मैथिली गजलक बढैत डेग संग आब मैथिली बाल गजलक डेग सेहो उठि गेल अछि। मैथिली बाल गजल जाहि द्रुत गति सँ अपन डेग उठओलक अछि, ऐ सँ तँ यैह लागैत अछि जे अगिला साल आबैत आबैत मैथिली बाल गजलक पोथी प्रकाशित भऽ सकैत अछि। संगहि इसकूलक पाठ्यक्रम मे बाल गजल सम्मिलित हेबाक संभावना सेहो साकार रूप लऽ सकत। पाठ्यक्रम मे सम्मिलित हेबाक बाद मैथिली बाल गजल सभ पढनिहार-पढौनिहारक संज्ञान मे नीक जकाँ आओत आ सामाजिक विकासक संरचना मे अपन महत्वपूर्ण योगदान, जे अपेक्षित अछि, सेहो दऽ सकत।

5
भोथ हथियार

श्री सुरेन्द्र नाथक कहल मैथिली गजलक संग्रह अछि "गजल हमर हथियार थिक"। ऐ पोथी मे हुनकर अडसठि टा गजल प्रकाशित भेल अछि। ई संग्रह 2008 मे आएल अछि जकर आमुख श्री अजीत आजाद जी लिखने छथि। ऐ पोथी कैँ आदि सँ अन्त धरि पढबाक बाद हमर यैह अभिमत अछि जे गजलक व्याकरणक दृष्टिसँ ऐ संग्रह मे अनेको कमी अछि, जाहि सँ बचल जा सकैत छल। पृष्ठ संख्या 13, 67 आ 70 परहक गजल मे चारिये टा शेर छै, जखन की कोनो गजल मे कम सँ कम पाँच टा शेर हेबाक चाही। संग्रहक कोनो गजल बहर मे नै अछि। हमर ई स्पष्ट मनतब अछि जे गजलकार कैँ प्रत्येक गजल मे बहरक उल्लेख करबाक चाही आ जँ आजाद गजल कहने छथि तँ इहो स्पष्ट रूपेँ लिखबाक चाही। ऐ पोथी मे काफियाक गलती भरमार अछि। कतौ कतौ तँ ई बूझना जाइ छै जे गजलकार बिना काफिया आ रदीफक मतलब बूझने गजल कहबा लेल बैस गेल छथि। एकर उदाहरण पृष्ठ 15 परहक गजल पढबा पर भेंट जाइ छै। ई तँ हम एकटा उदाहरण कहि रहल छी। आरो गजल ऐ दोख सँ प्रभावित छै, जतय काफियाक नियमक धज्जी उडा देल गेल अछि। जेना पृष्ठ 18, 19, 20, 21, 27, 29, 31, 34, 35, 36, 39, 40, 41, 43, 44, 45, 46, 47, 52, 53, 56, 57, 58, 66, 67, 68,70, 71, 72, 74, 75,77, 79 आदिमे काफिया तकलासँ नै भेंटैत अछि आ ऐ खोजमे मोन अकच्छ भऽ जाइत छै। ओना आनो पृष्ठ काफिया दोखसँ ग्रसित अछि, मुदा ई उदाहरण हम ओइ पृष्ठ सभक देने छी, जतय काफियाक झलकियो तक नै भेंटै छै। मैथिली गजल आइ जाहि सोपान पर चढि चुकल अछि, ओइ हिसाबेँ ऐ तरहक रचना गजलक नामसँ स्वीकृत होइ बला नै अछि। कियाक तँ बिना दुरूस्त काफियाक गजल नै भऽ सकैत अछि। ई संग्रह "अनचिन्हार आखर" युगक शुरूआत भेलाक बाद लिखल गेल अछि, तैँ हमरा ई आस छल जे गजलकार कमसँ कम

काफिया आ रदीफक नियमक पालन ठीकसँ केने हेताह, कियाक तँ "अनचिन्हार आखर" जुग मे आब गजलक व्याकरणक सभ नियम चिन्हार भऽ चुकल अछि। मुदा गजलकार काफिया आ रदीफक नियम पालन करबामे पूरा असफल रहलथि। ओना ऐ संग्रहक काफिया दोखकेँ पोथीक आमुख लेखक श्री अजीत आजाद पोथीक आमुखमे दाबल आवाजमे स्वीकार करैत कहै छथि जे कतेको ठाम काफिया "गडबडायल सन" बुझना जाइत अछि। ओना ई अलग गप थिक जे काफिया "गडबडायल सन" नै अपितु पूरा पूरी गडबडायल अछि। फेर श्री आजाद ऐ गलतीकेँ झाँपबा लेल इहो कहैत छथि जे "रचनाकारकेँ अपन सीमासँ बाहर आबि शब्द-व्यापार करबाक चाही"। मुदा गजलक अपन व्याकरण छै, जकर पालन केने बिना रचना गजल नै भऽ कऽ पद्य मात्र रहि जाइत छै। गजल आ कविताक बीचक अंतर जे अंतर छै, से ऐ तरहक तर्कसँ समाप्त नै भऽ जाइ छै। काफिया, रदीफ आ गजलक व्याकरणक अनुपालन नै हेबाक कारणेँ श्री सुरेन्द्र नाथक ई संग्रह गजल संग्रह नै भऽ कऽ एकटा पद्यक संग्रह भऽ कऽ रहि गेल अछि। संवेदनाक स्तर पर किछु रचना नीक अछि आ जँ गजलकार गजलक व्याकरण पर धेआन देने रहतथिन्ह, तँ नीक गजल लिखि सकैत छलाह। गजलकारक ई पहिलुक मैथिली गजल संग्रह बहुत आस तँ नै जगबैत अछि, मुदा हुनकर संवेदनात्मक प्रतिभा देखैत हम ई आस जरूर करै छी जे ओ गजलक व्याकरणक पालन करैत आगू नीक गजल कहताह आ "गजल हमर हथियार थिक" केँ चरितार्थ करताह। गजल तँ हथियार होइते अछि, मुदा बिनु काफिया, रदीफ आ बहरक नियमक पालन केने रचना गजल नै होइत अछि आ भोथ हथियार भऽ जाइत अछि। पद्यक हथियार पर काफिया आ बहरक सान चढल हुनकर नब गजल-हथियारक प्रतीक्षा रहत।

6

गजलक लेल

श्री विजय नाथ झाजीक गीत-गजल संग्रहक पोथीक नाम अछि "अहींक लेल"। ऐ पोथीमे गीत आ गजलक फराक-फराक दूटा प्रभाग छै। हम ऐ पोथीक गजल प्रभागक संबंधमे ऐठाँ किछु चर्चा करऽ चाहब। ऐ पोथीमे गजलकार श्री विजय नाथ झाजीक अठहतरिटा गजल प्रकाशित भेल अछि। पोथीक गजल पढलासँ ई पता चलैत अछि जे किछु गजल कैँ छोडिकऽ बेसी ठाँ काफिया आ रदीफक निअमक पालन कएल गेल अछि। पृष्ठ संख्या 47, 50, 54, 55, 56, 67, 71, 74, 75, 82, 94, 101, 110, 114 पर छपल गजलमे काफिया गडबडाएल अछि। ऐठाँ ई धेआनमे राखबाक चाही जे बिना दुरुस्त काफियाक रचना गजल नै भऽ सकैए। तखनो अधिकांश गजलक काफिया दुरुस्त अछि, जे गजलक विकास यात्राक हिसाबेँ एकटा नीक लक्षण अछि। काफिया, रदीफ आ गजलक व्याकरणक निअम पालन करबाक हिसाबेँ गजलकार ओहि गजलकार सभसँ फराक श्रेणीमे छथि जे गजलक व्याकरणकैँ नै मानबाक सप्पत खएने छथि।

ऐ गजल संग्रहक गजल सब कोन बहरमे लीखल गेल अछि, ऐ पर गजलकार मौन छथि। गजलक नीचाँमे बहरक नाम जरूर लीखल जएबाक चाही। बहरक ज्ञान नब पीढीक गजलकार सभमे बढेबामे ई महत्वपूर्ण डेग हएत। ओना तँ गजलकार कोनो गजलक नीचाँमे बहरक नाम नै लीखने छथि, मुदा गजल सभकैँ पढलासँ ई पता चलैत छै जे ऐ संग्रहक ढेरी गजल एहन अछि जाहिमे अरबी बहरक निअमक पालन करबाक नीक प्रयास कएल गेल अछि। ई स्वागत योग्य गप अछि। ऐसँ इहो पता चलैत अछि जे गजलकार अरबी बहरसँ नीक जकाँ परिचित छथि आ जँ ई बात अछि तँ हुनका बहरक नाम गजलक नीचाँमे फरिछाकैँ लीखबाक चाही। ऐ संदर्भमे हम पोथीक सबसँ पहिलुक गजलक (पृष्ठ संख्या 45) मतलाकैँ उद्धृत करऽ चाहै छी-

हमर पूजा, हमर परिचय, हमर श्रृंगार छी अपने

सकल सौभाग्य, मन, काया, रुधिर-संचार छी अपने

आब एकर मात्रा संरचना पर धेआन दिऔ, तँ पता चलै छै जे ऐमे मूल ध्वनि मफाईलुन माने "ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ" सब पाँतिमे चारि बेर प्रयोग कएल गेल अछि। माने ई शेर बहरे-हजजमे कहल गेल छै। ऐ गजलक आनो शेरमे मोटामोटी किछु गलतीकेँ छोडि बहरे-हजजक प्रयोग अछि आ किछुठाँ वर्ण दुरुस्त कऽ देला पर ई गजल अरबी बहर बहरे-हजजमे अछि। ई एकटा उदाहरण अछि, एहन आरो गजल ऐ संग्रहमे छै जे वर्ण आ मात्रामे किछु परिवर्तन भेला पर अरबी बहरमे कहल मानल जाएत। हमरा ई आस अछि जे गजलकार अपन अगिला गजल संग्रहमे ऐ बातक धेआन राखताह आ अरबी बहर युक्त गजल कहिकऽ मैथिली गजलकेँ समृद्ध करताह। शेरक पाँतिक अंतमे पूर्ण विराम वा कोनो विराम चिन्ह नै लगेबाक निअम अछि, मुदा पोथीक गजलक शेर सभक पाँतिक अंतमे पूर्ण विराम लगाओल गेल अछि, जे निअमानुकूल नै अछि आ एकर धेआन राखल जएबाक चाही छल।

संवेदनाक स्तरपर ई गजल संग्रह बड्ड नीक अछि आ गजलकारक विद्वताकेँ प्रकट करैत अछि। मुदा कएकठाँ भारी भरकम तत्सम आ संस्कृतक शब्दक प्रयोग गजलकेँ बूझबामे भारी बनबैत छै, जाहिसँ बचल जा सकैत छल। गजलमे क्लासिकल भाषाक प्रयोग नहिए हेबाक चाही, अपितु आम प्रयोगक भाषाक प्रयोग गजलक लेल बेसी नीक होइत छै। शेरमे एहन शब्दक प्रयोग जे आम बेबहारमे नै छै, गजलकारक शब्द सामर्थ्यकेँ तँ जरूर देखाबैत छै, मुदा शेरकेँ आम जनसँ दूर सेहो करैत छै। तैं शेर कहबाक काल हमरा हिसाबेँ बेसी क्लिष्ट भाषाक प्रयोगसँ बचबाक चाही।

अंतमे ई कहल जा सकैए जे "अहींक लेल" पोथीक गजल प्रभाग मैथिली गजलक विकसित होइत रूपकेँ अस्पष्टे रूपेँ, मुदा देखबैत जरूर अछि। ई पोथी गजलक व्याकरणक हिसाबेँ किछु गलतीकेँ छोडिकऽ नीक प्रयास अछि। ऐ संग्रहक कएकटा शेरमे अरबी बहरक पालनक प्रयास महत्वपूर्ण आ नोटिस करबाक जोग अछि। कएकठाँ क्लिष्ट आ संस्कृतनिष्ठ शब्दक प्रयोगकेँ जँ कात कए कऽ देखल जाइ तँ

संवेदनात्मक स्तरपर सेहो ई संग्रह नीक अछि। मैथिली गजलक विकास यात्रामे ई पोथी गजलक भविष्यक लेल नीक डेग अछि।

अमित मिश्र

1

कतिआएल आखर

बात चारि बर्ष पहिलुक अछि हमरा संगे एकटा संगी हमरे रूम मे रहैत छल । पढ़ैमे कने कमजोर छलै मुदा कंपटीसनमे हमरासँ 2-3 घंटा बेसीए राति कऽ जागै छल आ एकर फलस्वरूप 10 टा मे 4 टा सबाल जरूर हल कऽ लै छलै ।ओना तऽ हमरासँ बेशी बात नै करैत छल मुदा भोर होइते बाँकी बचल सबालक लेल हमरा लऽग जरूर आबि जाइत छल आ एखन ओ मित्र बी .टेक कऽ रहल अछि ।इ घटना चारि सालक बाद मोन पड़ल मुन्ना जीक एकटा शेर पढ़िकऽ

डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस
आगू बढ़बा लेल तँ प्रेम चाही

पिछला डेढ़ महिनासँ मुन्नाजीक गजल संग्रह "माँझ आँगनमे कतिआएल छी " थोड़े-थोड़े पढ़ै छलौँह मुदा काल्हि भरि राति एकर गहन अध्ययन केलौँ ।कुल 50 टा गजल आ 10 टा रूबाइ के संग्रह अछि "माँझ आँगन मे कतिआएल छी" ।पोथीक नाम पढ़ि मोनमे किदन-कहाँदन बात सब उठऽ लागल ।कतिआएल उहो माँझ आँगनमे बिचित्र सन लागल मुदा पढ़लाक बाद हमरा लागैत अछि जे शाइर एहि समाजके आँगन आ एहि समाज रुपि आँगनक माँझ मे अपन बैसार बनेने छथि ।इ भऽ सकैए जे समाजक किछु भागसँ इ कतिआएल हेताह मुदा पूरा समाजसँ किन्नौह कतिआएल नै लागै छथि । हमर इ कथनक सत्यता एहि संग्रह के पढ़लाक बाद बुझा जाएत । इ तऽ प्रेमो केलनि तऽ समाजके ध्यान मे राकि तैँए तँ कहै छथि

सब उमरि वर्ग के प्रेम चाही
मरितो दम धरि कुशल छेम चाही

आशा आ निराशाके फरिछाबैत कहलनि-

निराशा संग आशापर टिकल छै दुनियाँ
जँ देखलँहुँ भगजोगनी तँ दिबाली बुझू

बिहारक ताकत आ कमजोरी के समेटने इ शेर-

बिहारक सिरखारी बदलि गेल सन लगैए आब
श्रमिक घटलासँ कंपनी मालिक लगै बिहारी जकाँ

एहन-एहन कतेको दमदार शेर सबसँ सजल इ गजल संग्रह अपना-आप मे अलग पहचान बनबैत अछि ।

पहिले गजल के देखलापर एकटा बात हमरा खटकल जे छल मात्र चारि टा शेर । गजलमे कमसँ-कम पाँच टा शेर रहबाक चाही मुदा एहि संग्रहक गजल संख्याँ 1,2,7,10,11,19,22,23,24,25,27,28,32,34,35,37,39,42,43,44,47,48 मे मात्र चारिए टा शेर अछि जे की गलत अछि ।ओना शाइर आमुखक अंतीममे इ गलती स्वीकार करै छथि आ एकर जिम्मेदार अपना के मानैत भविष्यमे एकर सुधारक वादा करैत छथि मुदा हुनक शब्दक पकड़ आ भावक अध्ययन केला के बाद हमरा लागैत अछि जे शाइरक लेल उपरोक्त गजलमे एक-एक टा शेर बढ़ेनाइ कोनो भारी बात नै छलै तेँए हम एकरा आलस मानै छी ।
आब चलु काफियापर । एहि संग्रहक किछु गजलमे एकै काफियाक प्रयोग भेल अछि जेना 26म गजल मे तीन ठाम काफिया "चाहैए" अछि ।29मे पाँच ठाम "एखनो" 31मे पाँच ठाम "उघारू" 46म मे पाँच ठाम"केकरो-केकरो" अछि ।किछु और गजलमे इ बात अछि। ओना काफियाक दोहरेलासँ गजल गलत नै होइ छै ।
तेसर गजलमे मतला नै अछि किएक तँ इ गजलक पहिल शेर अछि

फाटैत छल जतए मेघ आ जमीन
पहुँचल पहिने ओतहि अभागल
बचल चारिटा शेरमे "अभागल" के काफिया मानि क्रमश: "राँगल ,भाँजल , माँजल आ साधल लिखल अछि ।4म गजलक मतलामे "करैए" आ राखैए" "ऐए" तुकान्त संग अछि मुदा पाँचम शेर मे काफिया "होइए" अछि । छठम गजलक अंतीम शेरमे"कहाइ" के बदला गलत काफिया "कहाइत" लिखा गेल । 32म गजलक मतला अछि
हमरा तँ सुख भेटैए गजलक गाँतीमे
ओहिना जेना जाड़ मे गर्मी भेटैए गाँतीमे

एहिठाम "गाँतीमे" रदीफ भेल आ काफियाक अता-पता- नै अछि ।ओना आन शेरमे काफिया "आतीमे" तुकान्त संग अछि ।
41म गजलक मतलामे काफिया "झमका आ चमका " तुकान्त "मका" संग अछि मुदा दोसर शेरमे काफिया "उठा" अछि ।
44म गजल मे काफियाक तुकान्त "एल" अछि मुदा दोसर शेरमे काफिया "रखैल" "ऐल" तुकान्त अछि ।
17म गजलमे अंग्रेजी शब्दक काफिया "गेम" आ "ब्लेम" लिखल अछि।
एहि संग्रहक सबटा गजल सरल वार्णिक बहरमे अछि ।ओना तँ इ बहर गजलक सबसँ हल्लुक बहर अछि मुदा शाइर इहो बहरमे बहुते बेर धोखा खाइत छथि । हमरा जानैत 26टा गजल गजलक कोनो शेरमे एक-दू टा वर्ण बढ़ा देलनि तँ कोनो मे घटा देलनि ।जेना
दोसर गजलक अंतीम शेरमे 15 के बदले 16 वर्ण अछि ।7म गजलक तेसर शेरमे 18 के बदले 19 वर्ण अछि । 9म मे दोसर शेरमे 11 के बदले 10 वर्ण अछि । 11म गजलक अंतीम शेरक अंतीम पाँतिमे 18 के बदले 17 वर्ण अछि ।एहन गजती गजल संख्याँ 12,14,15,18,19,20,22,24,26,28,29,30,31,32,34,35,38,42,43,46,47आ 48 मे सोहो भेल अछि । ओना जँ भावक बात करी तँ एहि गजल संग्रहके ऊँचाइ पर पहुँचा देने अछि एकर भाव । सबटा

गजल हृदय के छू लैत अछि आ सोचबाक लेल मजबूर करैत अछि तेँए इ आन संग्रह सबसँ बिल्कुल अलग अछि आ एकर आखर आन संग्रहक आखरसँ कतिआएल अछि । भावक कारणे इ संग्रहक "कतिआएल आखर" पढ़बाक योग्य अछि ।हमर सलाह अछि जे एकबेर एकरा अजमा कऽ जरूर देखू ।
बेस तँ अहूँ सब पढ़ू आ हम जाइ छी दोसर गजलक खोजमे . . .

2

गजल आ गीत मे अंतर की छै?

गजल आ गीत मे अंतर की छै? मात्र एक अक्षर के । गीत आ गजल दूनू गाओल जाइ छै । जँ ध्वनीक तुक {राइम्स } सभ पाँति मे मिलैत रहत त' गीत वा गजल दूनू सुनै मेँ बेशी नीक लागै छै । मुदा गीत मे राइम्स नहियो हेतै त' चलतै मुदा गजल मेँ प्राय: पाँति संख्याँ 1 ,2,आ तकरा वाद 4 ,6 , 8 , 10 . . . मे हेवाक चाही । गीत मे कतेको पाँति के बाद फेर सँ मुखरा दोहराओल जाइ छै मुदा गजल मे प्राय: तुकान्त वाला पाँति बाद कहल जाइ छै । गजल कम सँ कम 10 टा पाँतिक होइ छै जकरा 2-2 पाँति के रूप मे बाँटि क शेर कहल जाइ छै । । जहिना गीतक शास्त्र व्याकरण होइ छै{सा रे ग . . .} तहिना गजलक व्याकरण होइ छै । जहिना शास्त्रीय गायण मे राग होइ छै तहिना गजल मे बहर होइ छै । जहिना गीत कोनो ने कोनो ताल . राग . मे होइ छै तहिना गजल कोनो ने कोनो बहर मे होइ छै। आब कहू गीत आ गजल मे अंतर की?
नवका गायक त' गीतक टाँग -हाथ तोड़ि क' गाबै छथि । दू तीन टा शब्द के एकै साथ जोड़ि क' गाबैत छथि बूझू जे फेविकाँल सँ साटि देने होइ । जहिना गीत मे कोनो तरहक चिन्हक {कोमा ,फूल स्टाँप , आदि} के मोजरे नै दै छथि । ओहिना
गजल मे कोना पाँति मे कोनो चिन्ह{. , ? आदि} नै देल जाइ छै ।मात्र अपन नामक आगू पिछू {" "} चिन्ह लगा सकै छी ।
आब एना किए कैएल जाइ छै से नै पूछू ? अपने सोचू ने गीते जकाँ

गजलो के त' गाओल जाइ छै ।
आ आब कहू गीत आ गजल मे अंतर की? हमर एकटा मित्र गजलक बारेमे पुछलनि तँ कहलिअन्हि----

1} शेर- शेर दू पाँतिक होइत अछि आ अपना आप मे सदिखन पूर्ण भाव दै अछि आ आन पाँति सँ स्वतंत्र रहैत अछि ।

2} गजल- कम सँ कम पाँच टा शेरके जँ किछु तुकान्तक सँग एक ठाम राखल जाए त' ओ गजल बनै छै । एकटा गजल मे एकै रंग तुकान्त हेवाक चाही ।

3} रदीफ- गजल पहिल शेर के अंतीम सँ देखू जँ कोनो एहन शब्द जे शेरक दूनु पाँति मे काँमन होइ त' ओकरा गजलक रदीफ कहबै ।
आइ चलू संगे प्रेम गीत गेबै प्रिय
एकटा प्रेमक महल बनेबै प्रिय
एहि शेर मे "प्रिय "दुनू पाँति मे अछि तैँए एकर रदीफ भेल" प्रिय" ।
आब गजलक सब शेरक दोसर पाँति मे इ रदीफ रहबाक चाही इ अनिवार्य अछि ।

4} काफिया - काफिया मने मोटा मोटी तुकान्त{राइम्स} बूझू । जँ बाजै मे एकै रंग ध्वनी बूझना जाइ यै त' ओ भेल काफिया । काफियाक तुक ओहि शब्दक अंतीम सँ पता लागै छै । जे तुकान्त गजलक पहिल पाँति मे अछि सेह आन सब पाँति मे हेवाक चाही । मतलब जे गजलक पहिल शेरक दुनू पाँति मे आ आन शेरक दोसर पाँति मेँ ।
काफिया- जेना - जेबै . खेबै . नहेबै { ऐ मे "एबै" तुकान्त भेल
गमला . राधा . चेरा . केरा {एहि मे तुकान्त "आ" भेल}

हेतै , खेबै . झेलै {ऐ मे तुकान्त"ऐ" भेल}
रोटी , हाथी . रेती{ऐ मे "ई" भेल}
झोरी . बोरी {ऐ मे"ओरी" भेल}
एनाहिते और सब मे काफिया {तुकान्त }बनत ।
गजल पहिल शेर मे रदीफ आ काफिया क्रमश: पाँतिक अंतीम सँ अनिवार्य रूप सँ हेबाक चाही । आ आन शेरक दोस पाँति मे सेहो रदीफ आ काफिया क्रमश: अंतीम सँ हेएत ।

5} मतला- गजल पहिल शेर जेकर दूनू पाँति मे रदीफ आ काफिया क्रमश: अंतीम सँ होइ एकरा मतला कहल जेतै ।
चाँद देखलौ त' सितारा की देखब
अन्हारक रूप दोबारा की देखब

प्रेमक सागर मे बड नीक लागै
डुब' चाहै छी त' किनारा की देखब
एहि मे पहिल शेरक दुनू पाँति मे काँमन "की देखब" अछि तेँए इ एहि गजलक रदीफ भेल आ रदीफक पहिले देखू , दूनू पाँति मे "सितारा "आ "दोबारा " छै एकर तुकान्त भेल "आरा" तेँए इ भेल काफिया । आब दोसर शेरक दोसर पाँति मे देखू । रदीफ "की देखब" आ तुकान्त "आरा " के संग शब्द "किनारा " अछि । । आब एहि गजलक सब शेरक दोसर पाँति मे अंत सँ रदीफ "की देखब "
आ काफिया "आरा"
तुकान्तक संग हेबाक चाही ।

तुकान्तक पाता शब्दक अंत सँ चलै छै ।
6} मकता-- गजल अंतीम शेर जै मे शाइर अपन नामक प्रयोग करै छथि ओहि गजलक मकता कहल जाइ छै ।
मेघक डरे चान नै बहरायल
नै औता "अमित" नजारा की देखब

इ भेल मकता ।
शाइर अपन सब शेर मे अपन एकै टा नामक प्रयोग करैथ । जेना हम पहिल गजल सँ"अमित" लिखै छी त' आब कतौ "मिश्र " नै लिख सकै छी । वेश त' एते देखू आ लिखू । और कनेटा बात छुटल अछि जे अहाँ सब जानैत छी । वर्ण वला बात । त ' आब लिखू किछ नीक गजल किछु दिन पूर्व हमरे सन एकटा बिन पढ़ल लिखल गीतकार सँ भेट भेल ।हमरे जकाँ हुनको रचना लोकक माँथ पर द निकैल जाइ छलै । खैर ओ हमरा बतेलनि जे गीत लिखैत बेर जँ वर्ण गानि क लिखब त'

गाबै मे सुविधा हेतै । आ ओ वर्ण गानब सिखेलनि । तै पर हम कहलयनि जे एना वर्ण गानि क' हम सब "गजल "लिखै छी
आ तेकर नाम दै छी "सरल वार्णिक बहर" आ एकर वर्ण एना गानल जाइत अछि । वर्णमाला के जतेक वर्ण अछि{अ .आ सँ ल' क' य , र . . धरि} के एकटा वर्ण मानै छी । जतेक हलन्त रहै अछि तकरा मोजर नै दै छी अर्थात शुन्य{0} मानै छी । संयुक्ताक्षरमे संयुक्त अक्षर के एक {1} मानै छी । जेना की " भक्त" एहि मे 2 टा वर्ण भेल । एकटा "भ"आ एकटा "क्त" । एकर बाद एकटा शेर कहलौँ ।
भाग्य मे जे लिखल अछि तेँ विरह मे मरै छी
आशा केने छी कहियो त' मान नोरक धरबै
एहि शेरक दुनू पाँति मे 17 वर्ण अछि । एहि बहर मे जँ गजल लिखब त' सब पाँति मे पहिल पाँति एते वर्ण हेबाक चाही ।
ओ गीतकार कहलनि जे अहाँके वर्ण गान' आबै यै तेँए अहाँ नीक गीतकार बनब आ हमहूँ आब गजल लिखब । । गीत आ गजल मे एते समानता अछि त' आब कहू गीत आ गजल मे अंतर की ?

जगदानन्द झा मनु

1

गजलक लहास

हमरा पढ़क सौभाग्य भेटल कलानंद भट्ट कृत गजल संग्रह “कान्हपर लहास हमर” जे की 1983मे प्रकाशित भेल अछि। एहि गजल संग्रहमे कलानंद भट्ट जीक गजल प्रति सम्बोधन ‘गजलक मादे’क अलाबा कुल 48टा गजल वा गजल सन किछु अछि। भट्टजी अप्पन संबोधन ‘गजलक मादे’मे तँ विभक्ति सटा कए लिखने छथि मुदा बाद बांकी गजल सभमे विभक्ति शब्दसँ हटा कए लिखल अछि। ई संकेत अछि हुनक वा हुनक समकालीन मैथिली लेखकक द्वारा गद्य आ पद्यमे मैथिली प्रति कएल गेल अन्तर।

एहि संग्रहक मादे, गजलक व्याकरण पक्षपर अबैत छी। एक गोट गजल लेल सभसँ आवश्यक अछि काफिया आ रदीफक पालन मुदा एहि संग्रहक किछु गिनतीक गजल बाय लक छोरि कए बाद बांकी गजलमे काफिया आ रदीफक दोख अछि। जेना एहि संग्रहक पहिले गजलक मतला देखू –

“घर घरेक आगि सँ अछि जरल जा रहल

भाइ सँ भाइ द्वेषे भरल जा रहल ”

आब एहि मतलाक हिसाबे काफिया भेल ‘रल’, मुदा एहि गजलकेँ आँगाक शेर सबहक काफिया अछि – ‘बनल’, ‘बनल’, ‘चलल’, ‘कयल’।

गजल तीन केर मतला देखू –

“कहू की कथा कहुना जीबि रहल छी

फाटल गुदरी अपन हम सीबि रहल छी”

आब एहि मतलाक काफिया भेल ‘ीबि’, मुदा गजलक आन-आन शेरक काफिया अछि, ‘लीबि’,’पीबि’, ‘खीचि’, ‘पीति’। एहिठाम ‘लीबि’ आ ‘पीबि’ तँ ठीक मुदा ‘खीचि’ आ ‘पीति’ ?

गजल 6 केर मतला –

“बाट बाधित पहाड़े छै पाटल जखन
सीयत दरजी के आकासे फाटल जखन”
एहिठाम काफिया भेल ‘ाटल’ जेना की काटल, चाटल, साटल, मुदा एहि गजलक आन आन काफिया अछि ‘साटल’, ‘फाटल’, ‘जागल’, ‘लागल’। एहिठाम ‘साटल’ तँ ठीक अछि, ‘फाटल’ ठीक मुदा एकर पुनः प्रयोग आ ‘जागल’ आ ‘लागल’ ?
गजल संख्या 12 केर मतला –
“अहाँ जीबिते मनुक्ख कैँ जरा रहल छी
घेरि गामे कैँ स्वाहा करा रहल छी”
मतलाक काफिया भेल ‘रा’ मुदा एहि गजलक आगाँक शेरक काफिया प्रयोगमे अछि, ‘दनदना’,’खड़ा’, ’चला’, ‘बना’, ‘रचा’, ऐ गजल तेसर शेरक काफिया ’खड़ा’ ठीक अछि बांकी सभ गल्ती।
एहि तरहे 18,19,20,21,22,33,48म गजलक काफिया ठीक नहि अछि।
अंतिम गजलक मतला आओर देखू –
“शहर केर सागर मे आइ गाम डूमि रहल
कामांध कामिनी कैँ पकड़ि जेना चूमि रहल”
आब उपरकैँ मतलामे काफिया भेल ‘ूमी’ (दीर्घ ऊ कार आ मी) मुदा एहि गजलक आन शेरक काफिया राखल गेल अछि, ‘घूमि’, ‘चूसि’, ‘रेड़ि’, ‘बूकि’, आब घूमि ठीक बाद बांकी ‘चूसि’, ‘रेड़ि’, ‘बूकि’, कोन मादे ठीक भऽ सकैत अछि।
उपरका उदाहरन सभसँ एक डेग आगू बैढ़ बहुत रास गजल तँ एहनो अछि जाहिठाम काफिया केर कोनो स्थाने नहि राखल गेल अछि। आउ देखी किछु एहनो गजल-
गजल संख्या सातक मतला अछि –
“मरि मरि क’ जे जीबय से आदमी चाही
राखय बिहाड़ि हाथ मे से आदमी चाही”
आब एहि मतलामे देखी तँ दुनू पाँतिमे कोमन अछि ‘से आदमी चाही’ अर्थात ई भेल रदीफ। आब रदीफसँ पहिने एहि शेरक दुनू पाँतिमे कोनो काफिया अछि ? नहि ने। एहि तरहे एहि गजलक सभ शेर बिना

काफियाक अछि। एहिठाम गजलकार जानि अनजानि नहि जानि किएक ने धियान देलन्हि, मतलाक निच्चाक पाँतिकेँ कनिक बदैल कए काफिया ठीक कएल जा सकैत छल, देखू –
मरि मरि क' जे जीबय से आदमी चाही
बिहाड़ि हाथमे राखय से आदमी चाही
एहिठाम एकटा गप्प धियान देबए बला अछि जे गजल शास्त्र अनुसार बिना रदीफक गजल तँ कहल जा सकैए परन्च बिन काफियाक गजल, जेना बिन कनियाँ ब्याहक कल्पना। एहि तरहे, एहि संग्रहमे बहुत रास गजल बिन काफियाकेँ कहल गेल अछि जेना गजल संख्या 11,23,30,38,39,41,44,आ 46। एक बेर फेरसँ गजल संख्या 46 केर मतला देखी –
"ठेंगा जकाँ ठाढ़ भेल नागे देखैत छी
हम बाट-घाट सभठाम नागे देखैत छी"
आब एहि मतलाक दुनू पाँतिमे कोमन अछि 'नागे देखैत छी' जे की रदीफ भेल आ रदीफसँ पहिने काफिया नदारत।
कतौ कतौ बाय लक काफिया ठीको अछि तँ काफियामे एक्के शव्दक प्रयोग बेर-बेर अछि। जेना गजल संख्या 29 क मतला देखी तँ-
"जनम व्यर्थ बेटीकेँ देलौं विधाता
कर्म अपकर्म हम कोन केलौं विधाता"
ऐ शेरमे रदीफ भेल 'विधाता' आ काफिया भेल 'ेलौं'। आब एहि गजलक आन-आन शेरक काफिया अछि, 'बनेलौं', 'चढ़ेलौं', 'सिरजेलौं', 'बनेलौं', 'चढ़ेलौं'। मतलाक शेरक हिसाबे काफिया दुरुस्त अछि मुदा 'बनेलौं' आ 'चढ़ेलौं' शव्दक आवृति काफियामे एकसँ बेसी बेर अछि। एहि तरहे गजल संख्या 15 आ 45 मे सेहो काफियामे एक शव्दक आवृति एक बेरसँ बेसी बेर भेल अछि।
बहुत रास गजलमे तँ काफिया आ रदीफ दुनू असमंजसकेँ अबस्थामे अछि अथबा कहू तँ दुनूकेँ दुनू गल्ती अछि। जेना गजल संख्या 35केँ मतला देखी –
"बानरक हेँज जकाँ बौख रहल लोग
रंगल सियार जकाँ लौक रहल लोक"

एहि मतलामे देखी तँ रदीफ भेल 'रहल लोक' आ काफिया 'ौऽ', मुदा एहि गजलक आन-आन शेर सबहक काफिया आ रदीफ दुनू संगे अछि, 'दौड़ रहल लोक', 'सिरमौर बनल लोक', 'पछोड़ पड़ल लोक', 'सिलौट रहत लोक'। एहि शेर सभमे, 'दौड़ रहल लोक'मे मतलानुसार काफिया आ रदीफ दुनू दुरुस्त अछि मुदा तेसर आ पाँचम शेरमे रदीफ गल्ती अछि आ चारिम शेरमे तँ काफिया आ रदीफ दुनू गरबड़ा गेल अछि। कहि तँ एहि गजलकेँ पाँचो शेर धरि गजलकार ई नहि निर्धारित कए सकल छथि जे कोन काफिया अछि आ कोन रदीफ, एहि असमंजसमे खिच्चैर बनि सम्पूर्ण गजल लहास बनि गेल अछि। बिल्कुल एहने तरहक बीमारीसँ ग्रस्त गजल 43 सेहो अछि।

एहिठाम हम कही तँ गजलकारकेँ सामर्थपर नहि हुनक गजल व्याकरण प्रति अज्ञानताकेँ दोखी मानि सकैत छी। किएक तँ सामर्थक गप्प करी तँ एहि संग्रहक 17 म गजलमे दोहरा काफियाक सफल पालन कएल गेल अछि एकरा हुनक सामर्थ अथवा बाय लक कहि सकैत छी। जिनका काफिया आ रदीफ केर ज्ञान हेतनि ओ अतेक बेसी गल्तीक गुंजाइस नहि छोरता। एहि सन्दर्भमे 24 सम गजलक मतला देखू –

"सरिपहुँ अहाँ भैया कमाल करै छी
अछि भ्रष्ट आचरण मुदा गाल करै छी"

अर्थक मादे कहू तँ एहि शेरक दोसर पाँतिमे "करै"केँ जगह 'बजै' हेबा चाही मुदा गजलकार "करै छी"केँ रदीफ मानि "ाल"केँ काफिया बनोलनि। एहि तरहे मतलाक काफिया आ रदीफ ठीक अछि मुदा गजलक आन-आन शेरक काफिया आ रदीफ संगे अछि, "ताल करै छी", "नेहाल करै छी", "जाल करै छी", एतए धरि सभ ठीक मुदा अंतिम शेरमे अछि "टाल रखै छी" रदीफ 'करै छी'केँ जगह रखै छी अर्थात रदीफ गल्ती एकरे कहै छैक सौँसे खीरा खाए कऽ पेनी तीत।

आब आबी काफिया आ रदीफकेँ बाद गजल व्याकरण केर महत्वपूर्ण पक्ष बहरपर, तँ ई कहैमे कोनो संकोच नहि जे संग्रहक पूरा पूरी गजल बेबहर अछि। सरल वार्णिक बहरक साइद ओहि समयमे जनमे नहि भेल छल आ नहि एहि रूपमे संग्रहक कोनो गजल उतरि रहल अछि। वर्णवृत सेहो कोनो गजलमे नहि अछि, कतौ कोनो गजलक एक

आधटा शेरमे वर्णवृत्त अबितो अछि तँ गजलक बांकी शेरमे नहि अछि। एकटा उदाहरन देखू संग्रहक 14हम गजलमे गजलकार वर्णवृत करैक प्रयासमे छथि –

गजलक मतला अछि –

“भेल ई की कहाँ सँ लहरि गेल अछि

212 -212 - 112 - 212

प्रश्नवाचक धरा पर पसरि गेल अछि”

212 – 212 - 212 - 212

एहि मतलामे 212-212-212-212केँ वर्णवृत बनैत-बनैत बिगैर गेल अछि। एहिठाम या तँ गजलकार वर्णवृतसँ अज्ञात छथि अथवा चानबिंदुकेँ दीर्घ मानै छथि। गजलक आगू केर तीनटा शेरमे 212x4केँ सटीक वर्णवृतक प्रयोग अछि। गजलक दोसर शेर देखू –

“आदमी आदमी केर बैरी बनल

212 – 212 – 212 -212

कोन नभसँ घृणा ई उतरि गेल अछि”

212 – 212 – 212 - 212

मुदा गजलक पाँचम शेरमे अबैत अबैत वर्णवृत टूटि गेल अछि। पाँचम शेर –

“उर काँपैछ धरतीक भालरि जकाँ

222- 12 -212 -212

युग आदम कोना फेर पलटि गेल अछि”

222-222- 1 12- 212

जँ कनिक धियान देने रहितथि तँ एतेक लअग एला बाद वर्णवृत पूरा ने होबाक कोनो कारण नहि। कहब ई जे इहो गजल बेबहर भेल।

कतौ कतौ बुझाइत अछि जेना भट्टजी समकालीन हिंदी गजलकार सभसँ प्रेरणा लऽ कऽ मात्रिक छंदक प्रयोगक फिराकमे छथि। हलाँकी मात्रिक छंद गजलक हिस्सा नहि अछि तथापि एहि संग्रहक गजल एहनो सिस्टममे पूर्ण फिट नहि भए रहल अछि। पहिले गजलक मतला देखू –

“घर घरेक आगिसँ अछि जरल जा रहल

2121 -2112-12212
भाइ सँ भाइ द्वेषे भरल जा रहल”
2112-2221-2212
वर्णवृत तँ नहिए अछि मुदा मतलाक दुनू पाँतिमे 20-20 टा मात्रा अछि। ऐ तरहे गजलक तेसर चारिम आ पाँचम शेरमे 20-20 टा मात्रा अछि मुदा दोसर शेरक मात्रा गनियो कए कम बेसी अछि। गजलक दोसर शेर –
“कोन आयल जमाना जुआरी एतय (21 मात्रा)
भवना अविवेकी बनल जा रहल” (19 मात्रा)
एहिना सम्पूर्ण संग्रहमे नहि कोनो गजल मात्रिक गणनामे पूर्ण अछि आ नहि वर्णवृतमे। मने ई संग्रह पूरा-पूरी बेबहर गजल संग्रह अछि। काफिया आ रदीफक अशुध्यताक कारणे एहि तरह केर रचनाक संग्रहकेँ अजादो गजल केर श्रेणीमे रखनाइ उचित नहि।
गजल व्याकरणक एकटा आओर महत्वपूर्ण हिस्सा अछि मकता, अर्थात गजलक अंतिम शेर जाहिमे शाइर अपन नाम अथवा उपनामक देने होथि। एहि संग्रहक कोनो गजलमे मकताक प्रयोग नहि अछि।
आब आबी भाषा पक्षपर। गजलक भाषा एहन होबा चाही जे सुनिते माँतर मुँहसँ निकलै वाह ! वाह ! आ ई की सुनलहुँ आइ आ बुझै लेल दू दिन बादो शव्दकोश ताकैत रहू। एहि पोथीमे एकर सदत अभाव अछि। बहुत उपरकेँ भाषा, माटि थालमे ओँघरे वलाकेँ लेल जेना सुन्दर चौपाइ जकाँ नीक तँ बड्ड छै मुदा किछु बुझलौं नहि। किछु कठीन शव्द, ऐ संग्रहक पहिले गजलक एकटा शेर –
“क्षुब्ध धरती गगन नयन मूनल अपन
अछि वसाती बलाती बनल जा रहल”
आब ऐ शेरक की अर्थ बूझल जेए ? आ जँ बुझबो करब तँ कतेक काल बाद आ ओहो के ?
एकटा आओर शेर 37 सम गजलसँ –
“घर छोट-छोट भीत चूना सँ ढेउरल
चित्र ओहि पर राधा कृष्णक ललाम”
चूना, चित्र हिंदीक बेसाहल शव्द ओहूपर अर्थ की? ई ललाम की ? के

बुझत ? कठीन भारी भरकम शव्दकेँ अलाबो एहि संग्रहक भाषा मैथिली अवश्य अछि मुदा एहने एहने पोधी पढ़ला बाद हिंदीक दलाल सभ कहैत छै जे मैथिली हिंदीक अंग अछि अथवा हिंदीक उपभाषा अछि। ऐ संग्रहक बहुत कम एहेन गजल अछि जाहिमे हिंदी शव्दक प्रयोग नहि हुए। देखी किछु हिन्दीक शव्द –
गजल 1 मे – चमन
गजल 2 मे – श्रम, विवशता
कनीक आगू आबि गजल 10 मे – विकृति, रक्त
गजल 11 मे – आदेश, वैशाखी, आतंकित
गजल 12 मे – विकट, मनुष्यता, क्रूरता
गजल 14 मे – कहाँ, प्रश्नवाचक, धरा, संशकित, आभास
गजल 16 मे – निष्क्रिय, शिथिल, सदृश्य, विस्मय
गजल 18 मे – अम्बर, मुरझायल
गजल 19 मे – कहर, अग्रसर
कनी आओर आगू बढ़ी, गजल 38 मे – घटा, उषम, विषम, जल
बांकीओ गजलमे एनाहिते हिंदी शव्दक भरमार अछि। कतौ-कतौ तँ एकछाहा हिंदीए अछि। 15हम गजलकेँ ई दुनू शेर देखू –
"घरमे फूटल क्रिया गर्म सीमांत अछि
भावना संकुचित विषमयकारी ने भेल

मंत्र मधुमय कहाँ ओ विश्व वन्धुत्व केर
कोन उतरल ई युग दुराचारी ने भेल"
उपरकेँ दुनू शेरमे कतेक शव्द मैथिलीक अछि ? 39 म गजल केर ई शेर देखू –
"उर बसा द्वेष इर्ष्या घृणा केर लहरि
रक्त तर्पण करैछ ने कोनो जानवर"
जँ ई मैथिली तँ हिंदी की ?
आब आबी भाव पक्षपर, तँ एहि संग्रहक सभ गजलक भाव पक्ष जबरदस्त अछि। समाजक कोनो एहन कोण नहि जाहिपर शाइर ऐ संग्रहमे वर्णन नहि केने होथि। चापलूसीसँ शुरू कए आम लोकक

जीवनक विषमता, भ्रस्टाचार, महगाइ, अपहरण, लूटि-पाट, राजनीति सभ विषयपर अपन कलम चलबैत एक एक भावकेँ उजागर करैमे सफल छथि।

2

"गजल गंगा" केर समीक्षा

सभसँ पहिने अनिल जीकेँ ई गजल संग्रह लिखबाक लेल बहुत बहुत बधाइ आ शुभकामना। मैथिली गजलक आकाश गंगामे एकटा आओर नव गजल संग्रह "गजल गंगा"क आगमन मैथिली गजलक दशा आ दिशा लेल बहुत शुभ संकेत अछि। एक बेर फेरसँ अनिलजी सहित आन सभ गजल प्रेमी मैथिलकेँ बधाइ। हमर अपने गजल ज्ञान बेसी नहि अछि तथापि एहि संग्रहक मादे हम किछु नीक बेजए कहैक चेष्टा कए रहल छी। आशा करैत छी जे 'अनिल'जी हमर धृष्टताकेँ क्षमा करता।

कुल ८१ टा गजल अपना भितर समेटने ई संग्रह बहुते नीक-नीक गजलक सुन्दर गजल गंगा बनल अछि। आब एहि गंगामे असनान कतएसँ शुरू करी अर्थात हम अप्पन गप्पक शुरूआत कतएसँ आरम्भ करी। तँ हम शुरूआत करैत छी;

गजलक व्याकरण पक्षसँ :- आ गजलक व्याकरणक अ आ अछि मतला, काफिया, रदीफ, बहर आ मकता।

सभसँ पहिने मतला, मतला अर्थात गजलक पहिल शेर जे कि काफिया आ रदीफक निर्धारण करैत अछि। एहि संग्रहक सभ गजलमे अनिलजी मतलाक पालन बहुते सुन्दरसँ केने छथि। आब,

काफिया आ रदीफ : संग्रहक शुरूआतेमे अनिलजी संग्रहकेँ बहरक भिन्नताकेँ आधारपर दू भागमे बँटैत ई लिखने छथि जे काफिया आ रदीफक पालन भेल अछि। आ ठीके रदीफक पालन एहि संग्रहक सभ गजलमे बड़ नीकसँ भेल अछि। सगरो संग्रहकेँ पढ़ला बाद बुझलौं जे बहुतो गजलमे काफियाक पालन सेहो नीकसँ भेल अछि। ओतए ३७% गजलक काफियाकेँ ठीक करैक गुँजाइश अछि। चुकी ई संग्रह एखन अप्रकाशित अछि तेँ जँ सम्भव होइ तँ अनिलजी किछु संशोधित

कएला बाद एकरा आओर बेसी उत्कृष्ट बना सकैत छथि ।
जेना कि संग्रहक प्रथमे गजलक मतला-
"पढ़बाक मोन होइए <लिखबाक> मोन होइए
किछु ने किछु सदिखन <सिखबाक> मोन होइए"
एहिठाम काफिया भेल " e खबाक" मुदा गजलक आन आन शेर सबहक काफिया अछि बिछबाक, झिकबाक, निपबाक, <चिखबाक>, छटबाक, छिनबाक । एहिठाम चिखबाक छोरि कए बाद बाँकी ????
एकबेर भाग पहिलकेँ गजल संख्या ५ केर मतला देखू-
"काँट फूस अछि <भरल> बाटपर जहाँ-तहाँ
नढ़िया कूकुर <मरल> बाटपर जहाँ-तहाँ"
आब एहि मतलाक रदीफ भेल "बाटपर जहाँ-तहाँ" जे की दुनू पाँतिमे का ॅमन अछि । आब काफिया भरल आ मरलसँ भेल "रल" । मुदा आन शेर सबहक काफिया अछि दखल, पड़ल, जड़ल, महल, उड़ल, गड़ल । एहिमे पड़ल, जड़ल, उड़ल, गड़ल तँ ठीक मुदा दखल आ महल ?????
आगू बढ़ैत गजल १४ केर मतला-
"बहरक झंझटिसँ हमरा आजाद करु
हम गजल छी हमरा नै बरबाद करु"
एहि मतलाक काफिया भेल आकार बाद द (ाद) मुदा एहि गजलक आगूक शेर सबहक काफिया लेल गेल अछि याद, फरियाद, अनुवाद, लाज, काज, बात । याद, फरियाद, अनुवाद ठीक तँ लाज, काज, बात ???
एक बेर गजल १६ केर मतला देखल जेए -
"कानहापर गंगाजल ल' क' <बढ़लौं>कोना-कोना
मोन पड़ैए ऐ पहाड़पर <चढ़लौं>कोना-कोना"
एहिठाम काफिया भेल बढ़लौं, चढ़लौंसँ "ढ़लौं" मुदा एहि गजलक आन-आन शेर सबहक काफिया अछि; खसलौं, बचलौं, कटलौं, रखलौं आब ई सबटा कतेक ठीक ????
कनेक आओर आगू बढ़ैत गजल २७ केर मतला-
"जुनि पूछू की <करै>छी हम

नित्य स्वयंसँ <लड़ै> छी हम"
एहि मतलाक काफिया भेल "0रै" वा "0ड़ै" । आब एहि गजलक आगूक शेर सबहक काफिया जे लेल गेल अछि- डरै, बुझै, जगै, कनै, बजै, नचै, जनै, तकै । एहिमे "ड़रै"कैं छोरि बाद बाँकी सबटाकैं की ठीक कहल जेए ??????
गजल संख्या २९ केर मतला-
"एतेक बाझल किएक रहै छी <अपनामे> अहाँ
अबै छी बड़ी बड़ी राति क' <सपनामे> अहाँ"
एहिठाम काफिया भेल अकार संग "पनामे" । मुदा शाइर एहि गजलक आगाँक शेर सभमे काफिया लेने छथि; पटनामे, सतनामे, घटनामे, अयनामे, बधनामे, गहनामे । मतलाक हिसाबे आन आन शेरक काफिया मेल नहि क' रहल अछि ।
कनिक आगू जा कए गजल संख्या ४० केर मतला-
"चिन्ता तनकैं <दागि> रहल अछि की करियौ
मोन कतौ नै <लागि>रहल अछि की करियौ"
एहि मतलासँ जँ काफियाक निर्धारण हुए तँ काफिया भेल, "0ागि" । मुदा शाइर एहि गजलक आन-आन शेरक काफिया देने छथि; भागि, ताकि, मांगि, कानि, आबि, काटि, कहब बेजए नहि जे " भागि"कैं छोरि आन कोनो मतलासँ मेल खाइत नहि अछि ।
एहि तरहे कम बेसी एहि संग्रहक भाग १ केर गजल संख्या ६,९,१३,३०,३३,३५,३७,५१,५३,५४,५५ केर काफिया ठीक नहि अछि ।
आब एहि भागक अन्तिम गजल, गजल ६१ केर मतला एक बेर देखल जेए-
" नदी छोड़ि क' <नहरमे>एलौं
गाम छोड़ि क' <शहरमे>एलौं"
आब एहि मतलासँ काफियाक निर्धारण हुए तँ काफिया भेल "हरमे" मुदा शाइर एहि गजलक आगूक शेर सबहक काफिया लेने छथि- कहलमे, जहलमे, महलमे, जूड़शितलमे, सहलमे, गजलमे । मतला आ आन-आन शेरक बिचमे काफियाक कोनो मिलान नहि ।

आब आबी संग्रहक भाग दूमे । पहिल भाग जकाँ एहि भागमे सेहो शाइर मतला आ रदीफक पालन नीकसँ केने छथि । आब देखी काफिया तँ सबसँ पहिले भाग दू केर गजल संख्या ४ केर मतला-

"खेल सभटा <उसरि> जाइए
लोक सभटा <बिसरि> जाइए"

आब एहि मतलासँ काफिया भेल "सरि", मुदा आगाँक शेर सबहक काफिया अछि झखडि, ससरि, पिछरि, बिगरि, कुतरि, नचरि । मतलासँ मेल खाति एकौटा शेरक काफिया नहि ।

भाग २, गजल ६ केर मतला-

"जीवनकेँ <आशा> बदलल
प्रेमक <परिभाषा> बदलल"

एहिठाम काफिया भेल आकार बादक शा, षा अथवा सा । आशा, परिभाषा, बारहमासा, भाषा, अभिलाषा, तक तँ ठीक मुदा अन्तिम दूटा शेरक काफिया मौसा आ पाछाँ ।

आब एकबेर देखी भाग २, गजल १७ केर मतला-

"सभ जिवइत अछि सुबिधामे
हम रहइत छी दुबिधामे"

एहिठाम काफिया भेल उकारकेँ बाद "बिधामे" । सुबिधामे, दुबिधामे केँ बाद आगाँक शेरक काफिया अछि, कवितामे, अनकामे, अपनामे, पटनामे, बसुधामे । एहिमे सँ एक्कोटा काफिया मतलासँ ठीक मेल नहि कए रहल अछि ।

किछु एहने-सन भाग २ केँ गजल ९,१२,१८ आ २० केर काफिया सेहो ठीक नहि अछि । एहि संग्रहक अन्तिम गजलक मतला एकबेर देख लेल जेए-

"नीक बात किछु <कहू> अहाँ
गीत गजलमे <रहू> अहाँ"

कहू/रहूमे समान भेल "हू" । मुदा शाइर आन आन शेरक काफिया लेने छथि; चलू, धरू, करू, बड़ू । खाली ू ू ू ू तँ बिना "ह"केँ ू ू ू ू के की कहल जेए ???

कतेक रास गजल एहनो अछि जाहिठाम काफिया तँ ठीक बनिरहल

अछि मुदा काफियामे एक्के आखरक प्रयोग एकसँ बेसी बेर कएल गेल अछि । जेना भाग एकक गजल ९,२०,३६,४२ आ भाग दू केर गजल १० मे ।

मतला, रदीफ, काफियाक बाद गजल व्याकरणक एकटा मुख अंग अछि मकता । मकता, अर्थात गजलक अन्तिम शेर जाहिमे शाइर अपन नाम वा उप नामक प्रयोग केने होथि । एहि संग्रहक कोनो गजलमे मकताक प्रयोग नहि कएल गेल अछि ।

आब आबी गजल व्याकरणक एकटा पैधि कलापक्ष बहरपर । तँ जेना स्वयं शाइर स्वीकार केने छथि जे भाग १ केर ६१ टा गजलमे ओ सरल वार्णिक बहरक प्रयोग केने छथि । आ जेकर निर्वाह ओ बहुते नीकसँ केने छथि । आब भाग दू जाहिमे कुल २० टा गजल अछि, कोनो निर्धारित अरबी बहरक प्रयोग तँ नहि कएल गेल अछि, हाँ एहि गप्पक धियान जरूर राखल गेल अछि जे सब पाँतिमे समान मात्रा क्रम रहेए । अर्थात समान मात्रा क्रमक प्रयोग करैक सफल प्रयास केएने छथि । किछुठाम छोरि दी तँ । सबसँ पहिने तँ चन्द्रविन्दूकेँ जगह विन्दूक (अन्सुआर) प्रयोग कएल गेल अछि । ई शाइद टाइपिंग ग़लती हुए मुदा एहि कारणे बहुतो जगह मात्रा क्रम बिगैड़ गेल अछि । दोसर जतअ जतअ संयुक्ताक्षरक प्रयोग कएल गेल अछि ओतअ ओतअ मात्रा क्रम केर गलती भ गेल अछि ।

जेना गजल संख्या ५ केर अन्तिम शेरक प्रथम पाँति-

"मोन केर प्रश्न अछि कते"

२१ २१ २१ - २ १२ (शाइर द्वारा मानल)

२१ २२ २१ - २ १२ (वास्तविक)

एकटा आओर उदाहरण गजल ११ केर तेसर शेर देखल जेए-

"देश हमर अछि प्राण भाइजी"

२१ १२ - २ २१- २१२ (शाइर द्वारा मानल)

२१ १२- १ २ २१ - २१२ (वास्तविक)

एहने तरहक दोख गजल १२ केँ दोसर शेरमे आ १८ म' गजलकेँ दोसर शेरमे अछि ।

भाषा आ भाव पक्ष ; भाषापर जबरदश्त पकड़ लेने सम्पूर्ण संग्रहमे

भाषाक एकरूपताक दर्शन होइत अछि । संग-संग नव रचनाकार सभ लेल सिखबाक लेल नीक प्लेटफार्म थिक अनिलजीक ई गजल संग्रह । अनिलजी बिना कोनो बेसाहल शव्दक प्रयोग केने एतेक सरल व्यबहारिक मैथिलीक शव्द सबकेँ गूंठि कए एकता नव शुरूआत केने छथि । समान्यसँ समान्य लोक, एक-एकटा गजलक एक-एकटा शेरक आनन्द ओहि छन अर्थात पढ़ैत वा सुनैत मातर ल' सकैत अछि ।
भाषा शिल्पक गप्प करी तँ एक-एकटा छोट-छोट शेरमे एतेक बेशी गप्प नुकेएल अछि जे सुनि आ सोचि कए मनक भितर ख़ुशिक लाबा फुटै लगै छैक । एकटा उदाहरण एहि संग्रहक पहिल गजलक एकटा शेर-
"दुइ ठोर थिक अथवा तिलकोर केर तडुआ
होइए तँ लाज लेकिन चिखबाक मोन होइए"
मिथिलाक भोजनक पाक-कलाक श्रेष्ठताक प्रतिक तिलकोरक तडुआ । जेकर स्वाद, कुड़कूड़ेनाइक जवाव नै, सुनिते मातर मुँहमे पानि एनाइ स्वभाविक । स्वादिष्ट, पातर, कड़कड़ तिलकोरक तुलना पातर ठोरसँ । जवरदश्त उपमय आ उपमानक प्रयोग । ओकर बादो, लाज होइतो चिखबाक मोन ।एहेन एहेन सरल व पारम्परिक शव्द चयन हिनक गजल कौशलमे चारि चान लगा रहल अछि ।
सम सामयिक मिथिला मैथिलीक समाजमे जतेक कोनो समस्या वा वाद विवाद अछि सभपर अपन कलम चलबैत सुन्दर-सुन्दर शेरक द्वारा अनिलजी लोकक आ समाजक धियान ओहि दिस दियाबैमे सफल भेल छथि । समाजक अव्यवस्थाकेँ देख संघर्ष आ छिनबाक गप्प एक्के संगे कोना, देखू एहि शेरमे-
"आजादीक लेल एखनहुँ संघर्ष अछि जरूरी
व्यर्थ गेल सभ मांगब छिनबाक मोन होइए"
संग्रहक नामे अनुरूपे एहि "गजल गंगा"मे अनिलजी सभ किछु समेटने एकरा सुन्दर रूप देबैमे सफल भेल छथि ।

जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल"

1

प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल

‘थोडे आगि थोडे पानि’2008 मे प्रकाशित प्रसिद्ध गीतकार भाइ सियाराम झा ‘सरस’क 80 टा गजल संकलन थीक।सरसजी गजलक पोथीक भूमिकामे कविता,कथा,निबन्ध आदि विधामे आबि रहल रचना सभक स्तरपर सवाल उठौलनि अछि। लेखक,कवि,नाटककार कें की की पढबाक चाही,से सलाह देल गेल अछि.लेखक लोकनिमे प्रतिबद्धताक अभाव पर आक्रोश व्यक्त कएल गेल अछि। अपन समाज,अपन भाषाक प्रति अपन लेखकीय प्रतिबद्धताक वर्णन सरसजी जाहि तरहें केलनि अछि से बेर-बेर पढबाक आ मोनहि मोन हुनक चरण स्पर्श करबाक लेल बाध्य क’ देत। मुदा जँ अहाँ ताकब जे गजलकारकें की की पढबाक अथवा कथीक अभ्यास करबाक चाही से एहिमे नहि भेटत। गजलकार स्वयं गजलक सम्बन्धमे की-की पढने छथि तकर उल्लेख नहि कएल गेल अछि। गजलक व्याकरणक कतहु चर्च नहि अछि.गजलकारकें मोन पडैत छनि दक्षिण अफ्रीकाक कवि मोलाइशक क्रान्तिगीत आ फिलीस्तीनी कविक कविता,कोनो शायरक कोनो महत्वपूर्ण शेरक उल्लेख नहि केलनि अछि। एहिसँ गजल लेखनक लेल आवश्यक प्रतिबद्धताक आभास नहि होइत अछि।

पोथीक 80 टा गजलमे 62 टा गजलमे रदीफ आ काफियाक प्रयोग कएल गेल अछि जाहिमे 5 टा गजलमे रदीफ अथवा काफिया अथवा दूनूक निर्वाह सभ शेरमे नहि भ’ सकल अछि।16 टा गजलमे काफिया अछि, रदीफ नहि। 2टामे रदीफ अछि,काफिया नहि। अहूमे एकटामे सभ शेरमे रदीफक निर्वाह नहि भ’ सकल अछि। कोनो गजल एहन नहि अछि जकर सभ शेरमे वर्ण अथवा मात्राक एकरूपता हो।तें बहरमे त्रुटि साफ दृष्टिगोचर होइत अछि। एहि दिस गजलकारक ध्यान किएक नहि गेलनि से नहि जानि। सरसजीसँ लोककें बहुत अपेक्षा रहैत छैक, मुदा एहि सम्बन्धमे हुनक कोनहु स्पष्टीकरण सेहो कतहु नहि अछि। आशा अछि गजलकारक अगिला गजल-संग्रहमे आवश्यक

औपचारिकताक निर्वाह होयत। ई पढि क’ नीक लगैत अछि जे ‘.....धीरू भाइ तं एते धरि कहने रहथि जे खैयाम कें मैथिलीमे सुनबाक हो तं सरस कें सूनल जा सकैछ...’ तें सरसजीसँ अपेक्षा आर बढि जाइत अछि। सरसजी कहैत छथि,‘एहि संकलनक गजल सभ तं सहजहिं अपन लोकवेदक,माटि-पानिक,भाशा-साहित्यक आ संस्कार-संस्कृतिक प्रतिबिम्ब तं थिके,संगहि अनेक ठाम अनेक तरहें तकरा नब सं परिभाषित आ व्याख्यायित सेहो करैछ । नब-नब संस्कारक स्थापना सेहो करैछ ।.......’ सरसजीक उक्तिकें तकैत विभिन्न गजलक एहि शेर सभ पर विचार करू-

जै पाइने पैनछूआ कैरतै ने लोक, छीः छीः छीः
सेहो पाइन घटर-घटर घटघटा रहल,ई मैथिल छौ

जौं-जौं अहंक खसैए पिपनी,धप-धप तेना खसै छी हम
रसे-रसे उठबी तं सरिपहुं, होइए देव-उठान हमर

थप्पा समधिन देल समधि केर अंगा मे
उजरो मोंछ पिजाएल,फागुनक दिन आयल

अइ समुद्रक किन्हेरमे बड चक्रवातक जोर रहलै
बालु पर तैयो अपन हम नाम तकने जा रहल छी

बिज्झो कराओल बैसले रहि गेल नोथारी
गलियाक’ कियो खाइत आ उगलि रहल छलै

हम मरब,बेटा लडत,बेटा मरत-पोता लडत
कटब-काटब,जे बुझी-सदभावना-दुर्भावना

हवा-पानिक बिना एमहर भेलैए दूभि सब पीयर
ओम्हर बोडामे कसि-कसि,स्विस खातामे ढुकाबै छै

व्याकरण पक्षकें जँ उपेक्षित क’ देल जाए तँ कएटा गजलमे किछु शेर

महत्वपूर्ण अछि जे पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि किछु शेर जे पढबामे नीक नहि लगैत अछि, भ’ सकैए जे हुनका स्वरमे सुनबामे नीक लागय. मैथिली गजलक भण्डारकें भरबामे सरसजीक योगदानकें महत्वपूर्ण मानैत हम गीतकार सरसजीक प्रशंसक, मैथिलीक सुधी पाठक आ नव-पुरान गजलकार सभसँ अनुरोध करबनि जे कम-सँ-कम तीन बेर अवश्य पढि जाथि सरसजीक ‘थोडे आगि थोडे पानि’। नीक लगतनि।

2

अरविन्दजीक आजाद गजल

मैथिलीयोमे गजल पर खूब काज भेल अछि आ एखनो भ’ रहल अछि। गजेन्द्र ठाकुर गजलक व्याकरण विस्तार सँ प्रस्तुत केलनि आ अपनो बहुत गजल लिखलनि. आशीष अनचिन्हार मैथिली गजल ले’ स्वतंत्र साइट बनाक’ व्याकरण कें स्थापित करबामे अपनो योगदान करैत अपनो बहुत गजल लिखलनि आ आओर बहुत गोटे सँ गजल लिखबौलनि आ से काज एखनो क’ रहल छथि हिनका दूनू गोटेक अतिरिक्त आर बहुत गोटे मैथिली गजलकें समृद्ध करबामे योगदान क’ रहल छथि।ई प्रसन्नताक बात थिक। हमरा जनैत गजलकारक मुख्य तीनटा वर्ग अछि। एक वर्ग ओ अछि जाहिमे रचनाकार पहिने गजलक व्याकरण पढलनि आ तकरा बाद ओही अनुसारे गजल लिख’ लगलाह. दोसर वर्गमे ओ गजलकार सभ छथि जे पहिने गजल लिख’ लगलाह , बादमे गजलक व्याकरण दिस घ्यान गेलनि आ ओहि अनुसारे लिखबाक प्रयास कर’ लगलाह. तेसर वर्गमे ओ लोकनि छथि जे गजल सूनि क’, पढि क’ लीख’ लगलाह आ लीखैत चल गेलाह, पाछां उनटि क’ नहि तकलनि.ओ मात्रा अथवा वर्ण गनि क’ शेर लिखबाक-कहबाक चक्करमे नहि पडि अपन बातकें केंन्द्रमे राखि धडाधड लिखैत चल गेलाह आ लिखैत जा रहल छथि।

‘बहुरूपिया प्रदेशमे’ मात्र 24 दिनमे लीखल गेल 66टा गजलक संग्रह थीक जाहिमे गजलकार अरविन्द ठाकुरजीक कथन पर ध्यान देल

जाए: 'हम जे कहय चाहैत छी से महत्वपूर्ण छैक,ताहि लेल व्याकरण टूटय कि विधा विशेषक मापदंड,तकर हमरा परवाहि नहि अछि। ओकरा भल चाही त'हमर सहायक हुअए,बाधा ठाढ नहि करए ।' गजलकारक एहि कथनकें ध्यानमे राखि जँ हिनक गजल पढब त नीक लागत। 66 टा गजलमे 10टा गजल एहेन अछि जाहिमे रदीफ अछि,काफिया नहि. 16 टा एहेन अछि जाहिमे काफिया अछि,रदीफ नहि. 40 टा गजलमे रदीफ आ काफिया दूनू अछि. किछुए गजल एहेन हएत जाहिमे बहरसँ सम्बन्धित दोष नहि हो.मुदा,बहुत रास शेर सभमे जे बात कहल गेल अछि से व्याकरणक त्रुटिकें झांपन देबामे बहुत समर्थ लगैत अछि.सभ गजलक अंतिम शेरमे गजलकारक नामक प्रयोगक प्राचीन परंपराक निर्वाह नीक जकाँ कएल गेल अछि जे बहुत गजलकार नहि क' पबैत छथि. गजलकारक समक्ष सामाजिक,राजनीतिक आ सांस्कृतिक चेतनाक अवमूल्यनक विषाल क्षेत्रक अनुभवक संपदा छनि जे जहां-तहां विभिन्न गजलक विभिन्न शेर सभमे प्रगट भेल छनि।एकर बानगीक रूपमे प्रस्तुत अछि निम्नलिखित किछु शेर:

दूध लेल नेना आ रोगी हाकरोस करत
नै जखन गाममे मालक बथान रहत

एहि समाजक रूढि भेल अछि घोडनक ओछाओन सन
प्रेममे भीजल बतहबा ताहिपर ओंघरा रहल अछि

गाममे डिबिया जरल अछि रातिसं लडबाक लेल
मेट्रोपॉलिटन टाउनमे अछि राति दुपहरिया बनल

पात बिछैबाक बेर लोकक करमान छल
यार सभ अलोपित भेल ऐंठ उठेबाक बेर

रातिक जे एकबाल बढल

दुर्लभ सगर इजोरिया भेल

संसद केर फोटोमे किछुओ नहि हेर-फेर
सांपनाथ, नागनाथ,इएह दुनू बेर-बेर

कार खोजै छै एम्हर फूटपाथ पर सूतल षिकार
यम अबै छथि एहि नगर विभिन्न वाहन पर सवार

संसदमे घुसिआयल जे
सात जनम लेल केलक जोगार
गजलकारक भयंकर आत्मविश्वास एहि षेर सभमे देखू:

धन्य 'अरबिन'तों एलह गजलक जगतमे
फेर केओ 'खुसरो'की तोहर बाद हेताह

नै पाठक के चिन्ता अरबिन
नीक गजल के पढबे करतै

एहने आर बहुत रास नीक-नीक शेर वला गजल पढबाक लेल देखू श्री अरविन्द ठाकुरक रचल आ 'नवारंभ' द्वारा 2011 मे प्रकाशित आ बहुत सुंदर कागतपर 'प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स', नई दिल्ली द्वारा बहुत सुंदर मुद्रित गजल संग्रह 'बहुरूपिया प्रदेशमे'। अन्तमे हम गजलकारक उक्तिक उल्लेख कर' चाहब: '.......हाथक जेना सभ बान्ह टूटि गेल । एहन धारा-प्रवाह जे गजलक मिसरा,शेर,रदीफ,काफिया,बहर,गिरह सभकें सम्हारब कठिन....' भरिसक, इएह कारण थीक जे गजेन्द्र ठाकुरजी द्वारा हिनक गजल सभकें आजाद गजल कहल गेल अछि। हम एहि विचारसँ सहमत छी।

3

मैथिली गजलक संसारमे ‘अनचिन्हार आखर’

मैथिली गजल आ शेरो-शाइरीक लेल ‘अनचिन्हार आखर’ बहुत महत्वपूर्ण नाम अछि |
2008 मे इन्टरनेट पर मैथिली गजल आ शेरो-शाइरीक स्वतंत्र अभियान ल’क’ ‘अनचिन्हार आखर’ नामक ब्लागक संग उपस्थित भेलाह युवा रचनाकार आशीष अनचिन्हार | पहिल बेर गजेन्द्र ठाकुर द्वारा तेरह खंडमे गजल शास्त्र प्रस्तुत कएल गेल आ एतहिसं शुरू भेल मैथिलीमे सरल वार्णिक बहर | स्वयं आशीष अनचिन्हार सेहो एहि ब्लॉगपर मैथिलीमे गजल लिखबाक लेल व्याकरण प्रस्तुत करैत कतेक गजल लिखलनि आ आनो रचनाकार सभसं संपर्क कए हुनका सभकें प्रेरित केलनि गजल लिखबाक लेल |बहुत रचनाकार एहि अभियानमे सम्मिलित भेलाह |
इन्टरनेट पत्रिका ‘विदेह’क एक अंकमे सरल वार्णिक बहरमे आशीष अनचिन्हारक बहुत रास गजल प्रकाशित भेल |आशीषजीक एहेन 78 टा गजल 32 टा कता आ किछु रुबाइक संग वर्ष 2011 मे एक पोथीमे आएल जकर नाम अछि ‘अनचिन्हार आखर’जे हमरा जनैत मैथिलीमे पहिल एहेन पोथी अछि जाहिमे सरल वार्णिक बहरमे 78 टा गजल अछि |
एहि पोथीकें दू बेर पढलाक बाद हमर जे मंतव्य अछि से निम्नलिखित शब्दमे व्यक्त कएल जा रहल अछि :
1) एहि पोथीक आरम्भमे गजलक इतिहास आ मैथिली गजलक व्याकरण प्रस्तुत भेल अछि |शेर, मतला, रदीफ़, काफिया, मकता आ बहरसं नीक जकां परिचय कराओल गेल अछि |
2) पोथीमे 78 टा गजलक अतिरिक्त 32 टा कता आ 2 टा रुबाइ अछि |
3) 76 टा गजलमे रदीफ़ आ काफिया दूनू अछि | 2 टामे काफिया मात्र अछि |
4) 2 टा गजलमे 6 टा शेर अछि | शेषमे पांच-पांचटा शेर अछि |

5) वर्णक संख्याक अनुसार गजलक संख्या एहि तरहें अछि :
8 वर्णक 1 टा गजल अछि
9 वर्णक 1 टा गजल अछि
10 वर्णक 2 टा गजल अछि
11 वर्णक 4 टा गजल अछि
12 वर्णक 8 टा गजल अछि
13 वर्णक 3 टा गजल अछि
14 वर्णक 11 टा गजल अछि
15 वर्णक 12 टा गजल अछि
16 वर्णक 13 टा गजल अछि
17 वर्णक 7 टा गजल अछि
18 वर्णक 6 टा गजल अछि
19 वर्णक 4 टा गजल अछि
20 वर्णक 6 टा गजल अछि
21 वर्णक 1 टा गजल अछि

(6) मतला : मतला सभमे रदीफ़/ काफियाक पालन नीक भेल अछि| अपवादमे निम्नलिखित गजल सभ अछि :
गजल क्रमांक--56 बुझाइत / मिझाइत
गजल क्रमांक--71 तबीयत / रैयत
गजल क्रमांक--77 ओन्नी / मुन्नी
(7) काफिया : मतलाक काफिया आ आन शेर सभक काफियामे मिलान अछि | अपवादमे निम्नलिखित गजल सभकें देखल जाए :

गजल क्रमांक	मतलाक काफिया	आन शेर सबहक काफिया
10	दुराचार / भ्रष्टाचार	बेकार, सरकार,अन्हार, अनचिन्हार
20	भड़ुएक / पहरुएक	मालिएक, निशबदीएक
29	अदना/ पदना	विपदा,तगमा,भगवा,सुगवा
35	रोकब/ ठोकब	फ़ोड़ब,तोडब
36	बहन्ना / सन्ना	जुन्ना
43	राति / पांति	आँखि, माटि, हडाहि

55 टूटैत / छूटैत लुटैत, कटैत,खसैत
65 जरैत / डरैत भरतैक, बजैत, रहैत
67 खसा/ बसा बना,सजा,नचा
71 तबीयत / रैयत किस्मत
73 मानू / जानू बेकाबू

(8) मकता : बत्तीस टा गजलमे मकताक प्रयोग भेल अछि, से नीक भेल अछि |
(9) भाषा आ भाव पक्ष : गजलकारक अनुसार गजलकें प्रेमी-प्रेमिका (आत्मा-परमात्मा)क गप्प-सप्प सेहो मानल जाइत छैक आ गप्प-सप्प सदिखन गद्यमे होइत छैक, तें गजल लेल गद्यात्मक भाषा हेबाक चाही | से गद्यात्मक भाषाक नीक स्तरक आकर्षण सभ रचनामे अछि |
गजलकार कहैत छथि : “हम अपन गजलमे (किछु शब्दक) अपूर्ण रूपकें प्रधानता देने छी | पूर्ण रूपक प्रयोग हम खाली वर्ण आ मात्रा मिलेबाक लेल करैत छी |अपूर्ण भाषा गजलक लेल बेसी नीक |”
‘नहि’ के स्थानपर ‘नै’, ‘जाहिठाम’क बदला ‘जै ठाम’, ‘कतेक’ के बदला ‘कते’, हेतैक के बदला ‘हेतै’क प्रयोग शेर सभमे नीक लगैत छैक |
गजलमे मुख्य तत्व प्रेम होइत अछि |प्रेम कोनो मनुक्ख, प्रकृति,माटि-पानि, संस्कृति, भाषा, देश-दुनियासं भ’ सकैत अछि |
प्रेमक अभिव्यक्ति कतेक रूपमे भेल अछि : नोंक-झोंक, उलहन, उपराग,आक्रोश,आवेश आदि तत्व जहां-तहां विभिन्न गजलक शेर सभमे सुच्चा मैथिल दृष्टि नेने भेटल अछि | बानगीक रूपमे देखल जाए निम्नलिखित शेर सभ :
‘भूखक दर्द होइत छैक प्रकाशोसँ तेज
देखू पेटक खातिर दलाल बनल लोक’

‘चुप्प रहत मनुख गिदर भुकबे करतै
निर्जीव तुलसी चौरा कुकुर मुतबे करतै’

‘हरेक समय बितैए दु:ख आ दर्दमे
गरीब लेल नव-पुरान की साल हेतै’

‘देहे जिन्दा भावना मरि गेलै
जग लगैए समसान सन’
‘नहि बनत केओ राम मुदा
सेवक चाही हनुमान सन ’

‘रामक आदर्श तँ मरि गेल हुनके संगे
बुझू आब तँ खाली हुनक नाम चलैए’

‘ जे नै कमा सकए टका बेसीसं बेसी
लोक तँ ओकरे बुझैछै   बेकार सन ‘

‘घोघक रहस्य त एना बुझियौ
झरकल मूंह झपनहि नीक.’

‘लोक जहर दैए मुस्किया कए
आब त हँसीसँ डरनहि नीक’

‘हाथ सटेलासँ मोन केना भरतै
अहाँ करेजसं सटा लिअ हमरा’’

‘जाइ छी मुदा जेबाक मोन नै अछि
कोनो सप्पतसं घुरा लिअ हमरा’

‘नून नै चटबए पड़तै बेटीकें
आब तँ गर्भपात लेल युद्ध’

‘बुड़िबक देवी कुरथी अक्षत
हम एहने विकास करैत छी’

‘अहाँक दरस-परस बड्ड महग अछि
सटि जैतहुँ अहाँक देहमे बसात भेने’

‘सबहक घरमे एकटा अगत्ती जन्मए
सरकारक निन्न टुटै छै खुरफात भेने ‘

‘हमरा अहाँ नीक लगै छी सभ दिनसं
मुदा प्रेम अछि से कहि नहि पबैत छी’

अहाँकें प्रभावित करबाक लेल, चुप्प करबाक लेल, सोचबाक लेल, विचार करबाक लेल आ बेरपर मोन रखबाक लेल सैकडो शेरसं भरल अछि एहि पोथीक गजल सभ |

पोथीक सम्बन्धमे अपन टिप्पणी प्रस्तुत करैत गजेन्द्र ठाकुरजी कहैत छथि:

“मैथिलीक पुनर्जागरणक ऐ समएमे ऐ पोथीक आगमन मैथिली आ मात्र मैथिलीक पक्षमे एकटा सार्थक हस्तक्षेप सिद्ध हएत | स्वतः स्फूर्त गजलमे जे गेयता आ प्रवाह होइ छै से ऐ संग्रहक सभ गजल, रुबाइ आ कतामे अहाँकें भेटत |”

हम एहि टिप्पणीक समर्थन करैत छी |

(विदेह अंक 200 सँ साभार)

4
की ई आलोचना प्रायोजित अछि ?

(विदेहक 335म अंक 1/12/2021 मे प्रकाशित आशीष अनचिन्हारक आलोचना "भूमिका एक फाँक अनेक :"पर जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीक ई टिप्पणी। आशीष अनचिन्हारक आलोचना पढ़बाक लेल शीर्षकपर क्लिक करू)।

नवारम्भसं'चुन्नू' जीक पोथीक नाम अछि 'आबि रहल एक हाहि' | पोथी हमरा भेटल छल | उत्सुकता भेल | जहिया हाथमे आएल, ओही राति आरम्भसं पढ़ब आरम्भ केलहुं | किछु पढलाक बाद आगाँ पढबाक उत्साह नहि रहल | पढ़ब लंबित रहि गेल | काल्हि जखन आशीष अनचिन्हारजीक आलोचना पढ़लहुँ त हमरा लेल ई पोथी अत्यन्त महत्वपूर्ण भ' गेल | पहिने त पोथीक प्रचारक लेल ई प्रायोजित आलोचना लागल, बादमे आश्चर्य सेहो भेल जे भूमिकाक फोटोकॉपी मंगाय आशीषजी एतेक शीघ्र विस्तृत आलोचना लीखि लेलनि, मुदा हमरा लग पोथी रहैत हम भूमिको नहि पढ़ि सकलहुं | एकर दोख हम अपन अवस्थाजन्य अक्षमताकें द' सकैत छी | आइ पहिल बेर हमरा ई अनुभव भेल जे पोथीकें चर्चित बनयबामे ओकर भूमिकाक आलोचनाक की भूमिका होइत छैक | यैह कारण अछि जे हम पोथीकें ठीकसं पढ़बाक लेल आकर्षित भेलहुँ | दोसर कारण इहो भ' सकैत अछि जे दोसरक आलोचनामे सुखक अनुभव करबाक संस्कार हमरहु मोनमे विद्यमान हो | भूमिकाक आलोचनाक मिलान भूमिकाक आलेखसं करैत गेलहुँ, एहि तरहें सम्पूर्ण भूमिका पढब आसान भ' भेल | तकर बाद पोथीक रचना सभ सेहो पढबामे नीक लागल | आब हम सभटा रचना आ आलोचना पढ़िक' किछु कहबाक स्थितिमे आएल छी |

आलोचनाकें धारदार बनेबाक लेल किछु शब्दक उपयोग हमरा अनसोहांत लागल अछि (छुल मूतै बला प्रसंग-छुल)| एहि तरहक शब्द सबहक उपयोगसं सेहो एकटा अस्वस्थ परम्पराक जन्म भ' सकैत अछि, तें एहिसं बचबाक प्रयास हमरा आवश्यक लगैत अछि | आलोचनाक सीमाक अतिक्रमण नहि हो,से ध्यान राखब चाही | एकटा स्वस्थ परम्पराक रक्षाक लेल एकटा अस्वस्थ परम्पराकें जन्म देब कोना उचित कहल जाएत ? हमरा आलोचनाक सीमा निर्धारित करबाक अधिकार नहि अछि, मुदा एक सामान्य पाठकक रूपमे हमरा लगैत अछि जे आलोचना कबाछु नहि बनबाक चाही | हम देखलहुं अछि जे पोथीमे रचनाक माध्यमसं गामघर-, राज्य, देश आ दुनियामे

घटैत बहुत रास सामाजिक,आर्थिक,राजनीतिक घटना सबहक प्रति अपन विचार आ प्रतिक्रिया व्यक्त कएल गेल अछि | प्रतिक्रिया व्यक्त करब साहित्यकारक हाथमे छनि, व्यक्त करबाक माध्यम शब्द छै, शब्दक उपयोग विभिन्न विधामे करबाक स्वतंत्रता साहित्यकारकें छनि | एहि स्वतंत्रताक संग ओहि विधाक विधानक पालन करबाक कर्तव्य सेहो साहित्यकारक छनि | एहि कर्त्तव्यक पालन नहि भेलासं अस्वस्थ परम्पराक जन्म होइत अछि | साहित्यकार यदि चाहथि जे कर्तव्य पालनक जिम्मेदारी मात्र आन लोक लेल छै, ओ स्वतन्त्र रहताह, त ई उचित नहि कहल जा सकैत अछि |

आइ जे किछु साहित्यमे व्यक्त कएल जा रहल अछि, से पहिनहुं कोनो-कोनो रूपमे व्यक्त कएल जा चुकल अछि-ने| चिन्तक लोकनि कहैत छथि जे देवता आ दानवक संग्राम अनवरत चलैत आबि रहल अछि | रामायण,महाभारत आ आनो धर्म ग्रन्थ द्वारा विभिन्न रूपमे सम्वेदना प्रगट कएल गेल अछि | पछिला सय दू सय बरखमे सेहो हजारो साहित्यिक कृति द्वारा भिन्नभिन्न तरहें प्रतिक्रिया आ सम्वेदना व्यक्त -कएल गेल अछि आ एखनो कएल जा रहल अछि| प्रतिक्रिया आ सम्वेदना व्यक्त करबाक अनेक माध्यम अछि, मुख्य दूटा माध्यम अछि- गद्य आ पद्य| गद्यमे निबन्ध, कथा,लघुकथा,बीहनि कथा, उपन्यास,नाटक,संस्मरण,जीवनी, आत्मकथा आदि मुख्य अछि, तहिना पद्यमे कविता,दोहा,मुक्तक,हाइकू,गीत,गजल,खण्ड काव्य,महाकाव्य आदि मुख्य अछि | सभ विधाक अपन-अपन विशेषता छै | अही विशेषताक कारण ओइ विधाक अस्तित्व छैक |

गजल विधा सेहो अपन किछु खास विशेषताक कारण अस्तित्वमे अछि, काफिया आ बहर अनिवार्य अंग अछि गजलक | रदीफ़ अनिवार्य नहि अछि | रदीफ़ हो त केहेन हो,काफिया आ बहरक आयोजन कोना हो, से किछु अवधिक अभ्याससं सीखल जा सकैत अछि | सौभाग्यक बात अछि जे एहि सम्बन्धमे पर्याप्त जानकारी नेट पर उपलब्ध अछि जे गजलक व्याकरणक गहन अध्ययनक बाद

सबहक उपयोग लेल प्रस्तुत कएल गेल अछि | ओना अपन अनुभवसं हम जनैत छी जे सुनिसुनिक-', पढ़िपढ़िक-' बहुत गोटे रदीफ़ आ कफियाक विषयमे किछुकिछु जान-' लगैत छथि आ लिखनाइ शुरू क' दैत छथि | रदीफ़ चुनबामे त कष्ट नै होइत छनि, कारण समान शब्द अथवा शब्दसमूहक आवृति पहिल शेरक दुनू पांतीक अन्-तमे आ बादक प्रत्येक शेरक दोसर पांतीक अन्तमे होइत छैक | सभ शेरमे काफियाक मिलान ठीक रखबामे गजलक व्याकरणक जानकारी आ अभ्यासक आवश्यकता होइत छैक | एत' अबैतअबैत बहुत लोक -थाकि जाइत छथि आ बहर संतुलित रखबाक बेरमे असंतुलित भ' जाइत छथि अथवा ओतबेकें पूर्ण मानबापर आ मनयबापर अड़ि जाइत छथि | दुष्यन्त कुमार जीक एकटा शेरक एक पांती छनि :

'यहाँ तक आतेआते सूख जाती हैं कई नदियाँ-'

व्याकरणक ज्ञान आ निरंतर अभ्यास एकर एकमात्र समाधान अछि | जे सभ कहैत छथि जे हम विचारकें प्रधानता दैत छी,ओहो सभ रदीफ़ आ काफियाक पालन त अवश्य करय चाहैत छथि कारण तखने रचना 'गजल जकाँ' लाग' लगैत छै, मुदा रचनाकें गजल बनबामे बहरक खगता रहिए जाइत छैक | अहू संकलनमे देखलहुँ अछि जे रदीफ़ आ काफियाक निर्वाह करबाक प्रयास कएल गेल अछि | किछु गजलमे सभ शेरमे काफियाक निर्वाह करैत काल गंभीरताक अथवा धैर्यक अभाव दृष्टिगोचर होइत अछि | बहरक पालन लेल सेहो प्रयास भेल अछि, मुदा समयक अभावक कारण ओकरा प्रति गम्भीरता नहि राखल गेल अछि | जत' ओहि लेल उपयुक्त शब्द तकबामे किछु समय आवश्यक छलै, ओत' समय देबाक बदला रचनाकार आगू बढि गेल छथि किछु और बात कह्बाक लेल | एक बैसकीमे एकटा गजल लीखिक' उठब यदि लक्ष्य हो त गजलक संग न्याय नहि क' सकबाक संभावना अधिक भ' जाइत छैक | पोथीक भूमिका कहैत अछि जे गजलक वैधानिकता आ वैचारिकतापर आश्रित दूटा सम्प्रदायमे एक सम्प्रदाय विचारक स्वास्थ्यक बिना परवाह केने गजलक व्याकरणविधानकें अक्षुण्ण रखबाक समर्थक अछि-, दोसर

सम्प्रदाय गजलक माध्यमसं अपन बात विचार कहबाक समर्थक अछि- | एहि उक्तिक सोझ अर्थ ई अछि जे किछु गोटे गजलक व्याकरणकें पूर्णतः मानैत अपन बात कहैत छथि,मुदा बात दमगर नै रहि जाइत छनि ; दोसर दिस किछु गोटे गजलक व्याकरणकें आंशिक रुपें मानैत दमगर बात कहैत छथि | मतलब गजलक व्याकरणकें आंशिक रूपें मानैत कएल गेल रचनाकें गजल कहबाक आ ओकर स्वीकृति पयबाक आग्रह अछि | एकरा और सरल करी त ई कहल गेल अछि जे रदीफ़ रहित अथवा रदीफ़ सहित सभ शेरमे शुद्ध अथवा अशुद्ध काफिया बला रचनाकें गजल मानू | एत' प्रश्न ई उठैत छैक जे दूटा अनिवार्य अंगमे एकटाकें मानू, दोसरकें नै मानू, एकटा राखू,दोसर नै राखू, एहेन रचनाकें गजल कहबाक जिद्दे किएक ? विचारणीय बात ई अछि जे कोनो विधामे रचना करैत काल ओहि विधाक व्याकरणक प्रति गम्भीरताक अभाव ओहि विधाकें कोना स्वस्थ राखि सकैत अछि ? पोथीक एक पृष्ठपर जाहि रचनाकार सबहक प्रति आभार प्रगट कएल गेल अछि, ओहो सभ कतहुकतहु एहि अनियमितताक लेल दोखी -ने- मानल जा सकैत छथि| हम अपन दोखक चर्च करब आवश्यक बुझैत छी | हम एकटा गजलक प्रथम शेरक दुनू पांतीमे गजल लेखनमे परस्पर विरोधी दू तरहक विचारकें व्यक्त केने छी एक पांतीमे एकटा : विचार अछि किछु रचनाकारक जे बहरक झंझटसं मुक्ति चाहैत छथि, दोसर पांतीमे गजलक विचार अछि, जे अपन बरबादी नै देखय चाहैत अछि | हम कतहु अपने गजल कहैत काल ई बात कहि दैत छी, मुदा क्यो पढैत छथि त भ्रम होइत छनि जे हमहूँ गजलमे बहरक पालन करबाक विरोध करैत छी | ओ शेर अछि :

बहरक झंझटिसं हमरा आजाद करू

हम गजल छी, हमरा नै बरबाद करू

ई शेर स्थापित सरल वार्णिक बहरमे रचल गजलक अछि | विभिन्न प्रकारक बहरक जानकारी आवश्यक अछि गजल लेखनक लेल | ओना हमहूँ एखन सीखिए रहल छी, एखनहु गलती करैत छी आ मानैत

छी जे गलती भेल अछि, ओहिमे सुधारक प्रयास करैत छी | विचारमे हम स्वच्छ दुनियाँ चाहैत छी त अपन रचनामे सेहो स्वच्छता सुनिश्चित करबामे कोताही किएक ? यदि हमर रचना गजल कहयबाक योग्यता नहि रखैत अछि त ओकरा गजल कहबाक जिद्द्क की प्रयोजन ? गीत कहब,कविता कहब | किछु गोटेक मत ई भ' सकैत छनि जे रचनाकार आगूआगू- चलताह आ व्याकरण पाछूइहो कहल जा पाछू अथवा- सकैत अछि जे साहित्यमे सेहो लोकतन्त्र हेबाक चाही आ बेशी लोक जेना चाहैत छथि तकरे आधार अथवा तकरे सही मानल जाए, तखन जे साहित्यिक अराजकताक स्थिति उत्पन्न हएत तकर की करब ? आम जीवनमे हत्या अथवा शीलहरणकें अपराध मानल जाइत अछि | गजलमे बहरक अनिवार्यताकें नष्ट करबाक जोरजबरदस्तीक क्रियाकें - गजल विधाक शीलहरणक प्रयास नहि त आर की कहल जा सकैत अछि?

5

पाठककें डेरेबाक उपकरण थिक ई भूमिका (?)

(विदेहक 339म अंक 1/2/2022 मे प्रकाशित आशीष अनचिन्हारक आलोचना "अनुशासन : परिवर्तन=विद्रोह+ अराजकता=विद्रोह+अनुशासनहीनता"पर जगदीश चंद्र ठाकुर अनिल जीक ई टिप्पणी।आशीष अनचिन्हारक आलोचना पढ़बाक लेल शीर्षकपर क्लिक करू।

(अरविन्द ठाकुरजीक भूमिका आ आशीष अनचिन्हार जीक आलोचनापर पाठकीय प्रतिक्रिया (

मैथिली साहित्यमे एकटा महत्वपूर्ण नाम अछि अरविन्द ठाकुर | अरविन्द जीक नव पोथीक नाम अछि 'मीन तुलसी पातपर' | एहि झंझटिया नामक की मतलब से हमरा एखन धरि नहि बुझबामे आयल अछि | पोथी हमरा जहिया भेटल तहिये आरम्भसँ पढ़ब आरम्भ केलहुँ त डेराय गेलहुँ | 51पृष्ठमे गजल आ 37 पृष्ठमे भूमिका ? किछु गोटे

रचनासँ आनन्दित करबाक स्थानपर भूमिकासँ पाठककें आतंकित करबाक प्रयासमे लागल रहैत छथि | ई प्रवृति बढ़ि रहल अछि | हमरा भूमिका पढ़बाक साहस नहि भेल | कतहुकतहुसँ पढबाक क-ोशिश केलहुँ त मैथिली गजलक लेखनमे हिन्दी आ उर्दू साहित्यक भारीभारी -नाम देखिक' पोथीक नामक किछु सार्थकता प्रगट भेल | हमरा त अरविन्द जीक मैथिली गजल पढबाक छल, तें पोथीक 44 पृष्ठक बाद पढ़ब आरम्भ केलहुँ | जे पाँती सभ आकृष्ट केलक से अहूँ सभकें कहैत छी :

'बाहर हँसू नुका कय कानू
सीख इएह बुनियादी भेटल'

'हक ओकर छै लड़ि कए लेतए
स्त्री छै ओ दासी नै छै'

'यश कीर्तिक लिलसा छै वाजिब
शायर छै सन्यासी नै छै'

'पागक थहाथहीमे भेटतह ने मुकुट अरबिन
एहि क्षेत्रमे बसय छै भुमिहार बहुत कम सम'

'सुखक बोझा काँटसन भए जाइत एकदिन-
अहाँ एकरा किए नहि बाँटल करै छी'

'फूलक बिछौना की करब
लए कए खेलौना की करब'

'अभिव्यक्ति बन्हकी राखि कए
चानी आ सोना ई करब'

‘देह केर धर्म चिबाबैत रहल शील हमर
हुनका परदेशसँ आबयमे बहुत देर भेलय’

‘ज्वालामुखीक संगतिया हमर गजल रहल छै
किछु आगि परसबा लै अपनेक शहरमे छी’

‘कल्पना आ व्याकरण के खेल नहि छै शायरी
टीस मारत शब्द तखनहि कविक जँ भोगल हेतय’

‘करए खुनीमा जानक गप
आगि लगा कए पानिक गप’

‘ताली पीट करए हिजड़ा सभ
वंश सखासंतानक गप -’

‘अप्पन घरमे चाउर गिनि कए अदहन दए छथि
भोजभातमे व्यंजन सभ अह्गर चाहय छथि-’

‘राजधानीमे करय छी सएह गामहुमे करू
देह भैंसुरकें परसलौं, साँयसँ नखरा किए’

उपरोक्त पाँती सभमे जे भाव व्यक्त भेल अछि से कोनहुकोनहु -ने- रूपमे हुनक कविता आ कथामे सेहो अवश्य आएल हेतनि त की हुनक सभटा रचनाकें गजल कहल जाएत? नहि, ओ अपनहु नहि कह’ चाह्ताह | तखन कविताकें कविता कहब, कथाकें कथा कहब, गजलकें गजल कहब कट्टरता कोना भेलै ? भूमिकामे एक ठाम कहल गेल अछि ‘चूल्हिमे जाओ परम्परा |’ एकर की मतलब ? सभ रचना अथवा सभ नीक बात कि सभ व्यंग्य रचनाकें गजले कहल जाए ? तखन दोहा,चौपाइ,मुक्तक,कहमुकरी,कविता, दीर्घ कविता, खण्ड काव्य,महाकाव्य, बीहनि कथा,लघु कथा,दीर्घ कथा नाटक,उपन्यास, -

एते नाम रखबाक की अर्थ ? जतेक रचना अछि, सभकें गजल कहू, चूल्हिमे जाए दियौ परम्पराकें | जँ रदीफ़ आ काफिया मात्रसँ कोनो रचना गजल भ' जइतै, तखन श्रद्धेय मार्कण्डेय प्रवासीजी आ भाइ बुद्धिनाथ मिश्र जीक कएटा रचना गजल कहबैत, मुदा दुनू गोटे अपन ओहि रचना सभकें गीतक श्रेणीमे रखने छथि | प्रवासीजी विजयनाथ झाजीक गीत गजल संग्रह-'अहींक लेल'क प्राक्कथनमे लिखने छथि :

'विद्यापतिक गीतमे जे भनिता अछि तकरे गजलमे 'तखल्लुश'कहल जाइछ | अही हेतु हमर मान्यता अछि गजलक आविष्कारक सेहो विद्यापतियेकें मानल जयबाक चाही |' त भनिताक उपस्थितिक आधारपर विद्यापतिक सभ रचनाकें गजल कहल जाए ? आशीष अन्चिहार जीक आलोचना पढ़िक' अरविन्द जीक 37 पृष्ठक भूमिका पढबाक साहस भेल | अरविन्द जी सोचने छल हेताह जे अज्ञेय,गोंडवी,अली सरदार जाफरी आदिकें कियो नहि पढने हेताह जे हमरा द्वारा उठाओल बात सबहक जबाब देबाक साहस करताह | आब हमरा लगैत अछि जे हुनक भ्रम दूर भेल हेतनि आ हुनक सभ प्रश्नक उतारा भेटि गेल हेतनि |

एहि आलोचनामे अरविन्दजीक अतिरिक्त अन्य लोक सभक सेहो सभ प्रश्नक उतारा अछि जे बहरक ध्यान नहि रखबाक अपन रचनाक कमजोर पक्षकें महिमा मंडित करबाक प्रयास केने छथि अथवा क' रहल छथि अथवा भविष्यमे करबाक विचार मोनमे पोसने छथि | रचनाक कमजोर पक्षक आलोचनाकें अपन व्यक्तित्व अथवा सम्पूर्ण कृतिसँ जोड़िक' नहि देखल जेबाक चाही | एकरा विधाकें सशक्त बनयबाक दृष्टिसँ देखल जयबाक आवश्यकता अछि | अरविन्द ठाकुर जीक पोथी 'मीन तुलसी पातपर'मे 'संहिताक उपनिवेश नहि अछि साहित्य' शीर्षकक अन्तर्गत रचनाकारक भूमिकाआलेखपर आशीष -अनचिन्हार जीक आलोचना पढलाक बाद आब जँ कियो ईहो तर्क देबाक कोशिश करताह जे गीताक फलाँ अध्यायक फलाँ श्लोकमे कृष्ण भगवान कहने छथि जे सभ नियमताड़िक-तियम तोड़ि-' हमरा शरणमे आबि जाउ, अहाँकें बहरतहरक चिन्ता करबाक काज नहि अछि-, त

हुनको सय बेर सोच' पड़तनि | वस्तुतः आशीषजीक एहि आलोचनामे आलोचना थोड़ अछि,ज्ञान बेशी अछि जकर अध्ययन केलासँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे गजलमे बहरक पालन कतेक आसान अछि, बस बहरक लेल अहाँकें मानसिक रूपसँ तैयार हेबाक अछि, कोनो बहन्ना नहि बनेबाक अछि, कोनो गवाहक खोजमे नहि बौएबाक अछि | अरविन्दजी गबाह तकबाक लेल जतेक समय आ शब्द खर्च केलनि अछि ओहिसँ बहुत कम समय आ थोड़ प्रयासमे गजल सभ बहरयुक्त भ' जैतनि | मुदा अरविन्द भाइक भूमिकासँ ई त बहुत स्पष्ट भेल अछि जे गद्यपर हिनक पकड़ आ समर्पण बहुत प्रशंसनीय छनि जकर विस्तृत विवरण अछि अरविन्द जीक लेल आशीष अनचिन्हार जी द्वारा संपादित पोथी 'स्वतंत्रचेता' |

हमरा अरविन्द जीक कविता, कथा आ व्यक्तित्वक विशिष्टताक सम्बन्धमे अही पोथीक माध्यमसँ विस्तारसँ जनबाक अवसर भेटल अछि | बहुत सुन्दर कागत पर शशि प्रकाशन,कालिकापुर,सुपौल द्वारा प्रकाशित आ आरनवीन शाहदरा.आफसेट प्रोसेस.के.,दिल्ली-32 द्वारा मुद्रित 176 पृष्ठक ई पोथी 'स्वतंत्रचेता' अरविन्द जीक बहुमुखी प्रतिभा आ विलक्षण शब्दकौशलक जानकारी दैत अछि जे- हिनक व्यक्तित्व आ कृतित्वक प्रति ककरहु मोनमे इर्ष्याक भाव उत्पन्न करबाक सामर्थ्य रखैत अछि |

6
बिना बहर आ काफिया गजल कोना भेलै

साहित्यमे गद्यमे कथा, नाटक, उपन्यास, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, समीक्षा, आलोचना आदि लिखल जाइत अछि, पद्यमे दोहा, कविता, गीत, गजल, खंड काव्य आ महाकाव्य आदि लिखल जाइत अछि। सभ विधाक अपनअपन विशेषता छै-, जाहि कारणे ओ अस्तित्वमे अछि।
बच्चा सभ अपन मायबाबू-,दादादादी-,कक्काकाकी-,टोल पडोसक आन बच्चा सभसँ बजनाइ सिखैत अछि । बादमे शुद्ध बजनाइ आ लिखनाइ सिखैत अछि । व्याकरणक उपेक्षा क'क' शुद्ध बाजब आ

लीखब संभव नहि भ' सकैत छैक । साहित्य सृजनमे व्याकरणोक महत्वपूर्ण योगदान छै ।
गजल सेहो भारतीय भाषामे लोकप्रिय स्थान ग्रहण क' चुकल अछि । हिन्दीमे सेहो गजलक व्याकरण पचासो बरख पहिने आबि चुकल अछि ।
किछु पढ़िक' आ सूनिक' हम 1983 मे मैथिलीमे गजल कहब आरम्भ केलहुँ । किछु रचना मिथिला मिहिर आ माटिपानिमे छपबो कएल-, मुदा अपना संतुष्टि नै भेल । हिन्दीमे सेहो लिखय लगलहुँ । किछु रचना कोनोकोनो पत्रिकामे छपबो- कएल, मुदा व्याकरणक जानकारीक अभाव खटकैत रहल । आर शर्मा.पी.'महर्षि'क लिखल हिन्दी गजलक व्याकरण देखलहुँ, मुदा मैथिलीमे गजलक जानकारी मैथिली गजल आ शेरो शायरीक लेल समर्पित ब्लॉग-'अनचिन्हार आखर' पर पर्याप्त सामग्री देखि हर्षित भेलहुँ। एहि ब्लॉगपर एके ठाम तेरह खण्डमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा प्रस्तुत गजल शास्त्रमे गजलक विवेचन मैथिली भाषाक तत्वपर कएल भेटल । तकर बाद 22.07.2011 आ 21.09.2011 के बीचमे आशीष अनचिन्हार द्वारा पच्चीस खण्डमे मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास 'गजलक संक्षिप्त परिचय'क अंतर्गत प्रस्तुत कएल गेल । कतेक रास गजलकारकें एक मंचपर अनबाक काज केलक ई मंच। ई ब्लॉग मैथिली गजलक व्याकरणकें सहजतासँ लोकक समक्ष आनि शुद्ध गजल लिखबाक बाट प्रशस्त केलक।
जाहि समयमे मैथिली गजलक व्याकरण उपलब्ध नहि छल, तखनो शुरुआतमे स्वस्थ गजल कहल गेल छल जे कि ओहि समयक गजलकारक ज्ञानक परिचायक अछि। मुदा बीचमे किछु बेसिए बर्ख मैथिली गजलक एहन अवस्था रहलै जाहिमे जकरा जाहि तरहे भेलै ओ गजलकेँ गीजि देलकै आ से केखनो क्रांतिक नापर, केखनो कथ्यक नामपर तँ केखनो प्रगतिशीलताक नामपर। आब जखन गत बारह बरखसँ मैथिलीमे गजलक व्याकरण उपलब्ध अछि, तखन आब गजलक स्वास्थ्य सुनिश्चित करबाक आवश्यकता अछि। काफिया आ बहरक लेल थोड़ेक अभ्यास आ सावधानी रखैत एहि लक्ष्यकें प्राप्त कयल जा सकैत अछि । हमरा गजलक व्याकरणक जे जानकारी अछि

तकर मुख्य स्रोत मैथिली गजलक लेल समर्पित ब्लॉग 'अनचिन्हार आखर' अछि।
आशीष अनचिन्हार द्वारा प्रस्तुत 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास' और 'मैथिली गजलक रेडी रेकनर' मे सेहो विस्तारसँ मैथिली गजलक सभ पक्षपर विचार प्रस्तुत कएल गेल अछि । हमरा ओकर बहुत थोड़ जानकारी अछि ।
हमरा गजल लेखन लेल जे न्यूनतम जानकारी अपेक्षित लागल अछि से एतय प्रस्तुत कएल जा रहल अछि :

1. गजल लेल मूल तत्व अछि)i)सही काफिया)II) एक समान बहर आ)iii) दमदार कथन ।

बहर,काफिया आ रदीफ : एकटा गजलक शेर सभ देखू :

लोक नीचाँ उतरि जाइए
मारि सभठाँ बजरि जाइए

ई गजलक पहिल शेर अछि । एहि शेरक दूनू पाँतीक अन्तमे समान शब्द अछि 'जाइए' आ एहि शब्दक पाछाँ पहिल पाँतीमे अछि शब्द 'उतरि' आ दोसर पाँतीमे अछि शब्द 'बजरि' अर्थात दूनू शब्दमे 'रि' आ ओकरा पाछाँ 'अ' ध्वनिमात्रा / समान अछि । अतः शब्द 'जाइए' भेल एहि गजलक रदीफ आ 'अ' ध्वनिक संग 'रि' भेल काफिया । पहिल शेरकें मतला कहल जाइत अछि, शेरक दूनू पाँतीकें अलग-अलग मिसरा कहल जाइत अछि ।

दूनू पाँतीमे मात्राक्रम अछि :2122-12-212 यैह भेल एहि गजलक बहर अर्थात छंद । आ जे बहर मतलामे लेल गेल अछि तकरे निर्वाह पूरा गजलमे हेबाक चाही। तेनाहिते आन गजलमे जे बहर हो सएह बहरक निर्वाह हेतै। एकटा गजलमे एकसँ बेसी मतला भ' सकैत अछि । एहि गजलमे दोसर आ तेसर शेर सेहो पहिल शेर जकाँ दूनू पाँतीमे

रदीफ, काफिया आ समान मात्राक्रमसँ युक्त अछि, आ तें ईहो दूनू शेर मतला अछि -

गाछ कहियो मजरि जाइए
फेर कहियो झखड़ि जाइए

आगि सभठाँ पसरि जाइए
खेल सभटा उसरि जाइए

आब नीचाँक शेर सबहक दोसर पाँतीमे समान रदीफ, काफिया आ सभ पाँतीमे समान मात्राक्रम देखल जाए :

पाइ राखू अहाँ बैंकमे
पाइ हाथसँ ससरि जाइए

मूनि राखब कथी कोनठाँ
मूस सभटा कुतरि जाइए

लोक कतबो हुए जोरगर
एक दिन सभ नचरि जाइए

अतः उपरोक्त गजलमे 'जाइए' शब्द रदीफ अछि, 'अ' ध्वनिक संग 'रि' काफिया भेल आ बहर भेल मात्राक्रम 21-22-12-212.

गजलक अंतिम शेर जाहिमे गजलकारक नाम उपनाम रहैत अछि / ओकरा मकता कहल जाइछ । एखन धरि ई गजल बिना मकताक गजल अछि। मकताक रूपमे ई शेरलेल जा सकैत अछि :

मास अगहन अबै छै 'अनिल'
लोक कातिक बिसरि जाइए

उपरोक्त उदाहरणक संग रदीफ, काफिया आ बहरक निम्नलिखित परिभाषा देल जा सकैछ :

रदीफ़ गजलक मतलाक : दुनू पाँतीक अन्तमे आ बाद बला शेर सभक दोसर पाँतीक अन्तमे कोनो समान वर्ण अथवा शब्द अथवा शब्दक समूह होइत अछि ।

काफिया गजलक मतलाक : दुनू पाँती आ बादक सभ शेरक दोसर पाँतीमे रदीफसँ पहिने स्वर साम्य युक्त तुकान्तक होइत अछि काफिया । ई कोनो ध्वनिक संग(मात्रा) कोनो वर्ण अथवा किछु वर्णक समूहक रूपमे अथवा मात्र कोनो ध्वनिक रूपमे रहैत अछि ।

बहर : गजलक सभ पाँतिमे समान मात्राक्रमकें बहर अर्थात छंद कहल जाइत अछि ।

2. मात्राक गणना :

ह्रस्व अथवा लघु मात्राकें 1 आ दीर्घ अथवा गुरु मात्राके 2 सँ प्रदर्शित कएल

जाइत अछि ।

ह्रस्व वर्ण)1 मात्रा बला :(अ,इ,उ, क सँ ङ,, च सँ ञ, ट सँ ण, त सँ न, प सँ म, य सँ ह धरि, चंद्रविन्दु बला वर्ण ।

दीर्घ वर्ण)2 मात्रा बला : (आ,ई,ए,ऐ,ओ,औ,अं,अ:,ऐकार,ओकार,औकार,अनुस्वार,विसर्ग बला वर्ण, संयुक्ताक्षरसँ पहिने बला वर्ण से चाहे एक शब्दमे हो वा कि दू) कोनो (मात्र गजलमे) । एहिकेँ अरितिक्त गजलमे(अलग शब्दमे-अलग

शब्दमे एकै संग बाजल जाए बला दू टा लघुकेँ सेहो दीर्घ मानल जाइत ई शब्द संस्कृतक हिसाबें "गड़बड़" छै जेना1111 छै मुदा गजलमे एकरा 22 मानल जाइत छै। संस्कृतक छंद एवं अन्य प्राचीन छंदमे गड़बड़ शब्दकेँ 22 मानब निषेध छै। गजलक अरूजी सभ गजलमे प्रवाह अनबाक लेल एहन व्यवस्था केने छथि।

3.सही काफिया: शब्दक उदाहरण-

पहिल शेर शब्द-मतलामे काफिया / अन्य शेर सभलेल उपयुक्त काफिया

पातक बाटक / बालक चाल / पालक /क हाथक /

बाटपर खाटपर / हाटपर टाटपर / घाटपर /

पानिक आनिक / हानिक /

हाथमे पातमे / बाटमे चासमे / कातमे / भातमे /

कलमसँ पतनसँ / गगनसँ पवनसँ/ मननसँ / चलनसँ /

बसन्त अनन्त / दिगन्त चलन्त / भिड़न्त /

जीवन तीमन / भोजन अनमन / पहिरन /

घर / डर हर / चर / तर /

अखबार बाजार / संसार व्यापार / लाचार / उपहार /

4. (i) मात्राक गणनाक उदाहरण :

कमल बिना / अहाँ / चलू / कहू / सुनू / कते / : 12

सदाशिव : चकाचक / दनादन / निशाकर / महाजन /122

देखल कान्हा / नोतल / भागल / सूनल / / सदिखन निश्चित / : 22

ध्यान / लोक / धोन्हि / अन्त / राति / मेघ / नाम / : 21

प्रत्यक्ष :221 / आवश्यक :222

(ii) मात्राक्रमक उदाहरण :

'सदाशिव'- एहि शब्दमे सदा आ शिव शब्दक स्थान परिवर्तन केलासँ कतेक शब्द अथवा शब्दक समूह बनि सकैत अछि आ तदनुसार ओते तरहक मात्राक्रम सेहो । जेना निम्नलिखित शब्द समूह आ ओकर-मात्राक्रमक अवलोकन कयल जाए :

शब्द समूह मात्राक्रम
सदा शिव शिव 1222
सदा शिव सदा 12212
सदा सदाशिव 12122
एहि शब्द समूहक कय बेर आवृति सेहो एहि प्रकारें भ' सकैत अछि :
सदा शिव सदा शिव 122-122
सदा शिव सदा शिव सदाशिव 122-122-122
सदा शिव सदा शिव सदाशिव सदाशिव 122-122-122-122
सदाशिव शिवसदाशिव शिव- 1222-1222
सदाशिव शिवसदाशिव शिव सदाशिव शिव- 1222-1222-1222
सदाशिव शिव सदाशिव शिव सदाशिव शिव सदाशिव शिव-1222-1222-1222-1222

सदा शिव सदासदा शिव सदा - 12212-12212
सदा शिव सदासदा शिव सदा -सदा शिव सदा - 12212-12212-12212
सदा शिव सदासदा शि -व सदासदा शिव सदा -सदा शिव सदा - 12212-12212-12212-12212
सदा सदाशिव सदा सदाशिव 12122-12122
सदा सदाशिव सदा सदाशिव सदा सदाशिव 12122-12122-12122
सदा सदाशिव सदा सदाशिव सदा सदाशिव सदा सदाशिव -12122-12122-12122-12122

ऊपर अंकित विभिन्न मात्राक्रममे अर्थात विभिन्न बहरमे गजल कहबाक अभ्यास कयल जा सकैत अछि । पहिनेसँ डेढ दर्जनसँ अधिक बहर चलनमे अछि ।

उदाहरण आ अभ्यास करबाक लेल किछु गजलक पहिल शेर प्रस्तुत अछि उदहारण सभ देबासँ पहिने ई स्पष्ट कऽ दी जे गजलमे बहरकेँ) पालन करैत काल जे अनुशासित रहैत छथि तिनका लेल कि‍छु नियम शैथिल्य सेहो भेटैत छनि आ एकर संपूर्ण जानकारी (वा कि छूट) "मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास" आशीष अनचिन्हारक नामक पोथीमे भेटत। उदाहरण दैत काल हम ई नियम शैथिल्य केर : (सेहो उल्लेख केलहुँ अछि जाहिसँ पाठककेँ बुझबामे सुविधा होइन।

(1)
जखन घूरि पाछाँ तकै छी)122-122-122)
अहाँ मोन हमरा पड़ै छी)122-122-122)
(काफिया 'ऐ'क मात्रा अछि (

(2)
हसै छी कनै छी गजल गीतमे हम)122-122-122-122)
अहीकें तकै छी गजल गीतमे हम)122-122-122-122)

अथवा
हमर मैथिली ई हुनक मैथिली ई (122-122-122-122)
अहँक मैथिली ई सभक मैथिली ई (122-122-122-122)
(काफिया 'अ' ध्वनिक संग 'क' अछि (

(3)

मोनमे गाम अछि गाममे आम अछि)212-212-212-212)
गाछपर आम अछि देहपर घाम अछि)212-212-212-212)
(काफिया 'आ' मात्राक संग 'म' अछि)

(4)
गामो कहय जय मैथिली)2212-2212)
शहरो कहय जय मैथिली)2212-2212)
(काफिया 'ओ'क मात्रा अछि (
उपयुक्त काफियाक संग एहि चारू पहिल शेरक अनुसार अन्य कम-सँ-सम चारिटा शेर कहि गजल पूर्ण कयल जा सकैत अछि । मने गजलमे कमसँ कम5 टा शेर रहबाक चाही।

5. मीरई बहर एकटा नियम शैथिल्य केर तहत बनल छै जकर : बहर-उद्येश्य छै नव गजलकारकेँ सुविधा होइन। उर्दू आ हिंदी दूनूमे सेहो एहि बहरक प्रयोग कएल जाइत छै। एहिमे गजलक पहिल शेरक दुनू पाँतीमे दूटा अलगअलग शब्दक लघु वर्णकें मिलाक-' एकटा दीर्घ मानल जा सकैए यदि आन सभ शेरक सभ पाँतिमे सेहो दीर्घक संख्या पहिल शेरक दुनू पाँतिक दीर्घक संख्याक समान भ' जाइ । एहि बहरकें मीर-बहर कहल जाइत अछि । अहिना और बहर अथवा छन्द और काफियाक जानकारीक लेल'अनचिन्हार आखर'ब्लॉगपर स्थित गजल शास्त्र आ व्याकरणक अध्ययन कयल जेबाक चाही ।

6. अपन पसंदक बहर :

अपन पसंदक बहरमे सेहो गजल कहल जा सकैत अछि । अपना पसंदक एक पाँती लिखू जाहिमे रदीफ़ आ काफिया हो, ओकर मात्राक्रम देखू, ओही मात्राक्रममे दोसर पाँती सेहो लिखू । गजलक पहिल शेर भेल । आब अही मात्राक्रममे कमकम और चारिटा शेर -सँ- लिखिक' गजल पूर्ण क' सकैत छी । उदाहरण :

मातिपानि मिथिला केर बाजय जय मिथिला जय मैथिली-
21 21 22 21 22 2 22 2 212
गाछपात मिथिला- केर गाबय जय मिथिला जय मैथिली

बाजय आ गाबय केर अनुरूप पाबय, मानय,जानय, लाबय आदि शब्दक उपयोग काफियाक लेल कय 'जय मिथिला जय मैथिली' रदीफ रखैत अही मात्राक्रममे और चारिटा शेर पूर्ण कय गजल पूर्ण कएल जा सकैत अछि ।

7. बिना रदीफक गजल भ' सकैत अछि । उदहारण लेल एकटा गजलक पहिल शेर देखल जाए :

कौआकें कौआ कहि देल
बूझू बड़का गलती भेल

एहिमे 'देल' आ 'भेल' काफियाक शब्द अछि । दूनू पाँतीमे मात्रा क्रम 22222221 अछि । यैह भेल बहर । एहिमे रदीफ नहि अछि । आब आगाँ एहि गजलक दोसर,तेसर,चारिम,पंचम शेर अर्थात चारिम छठम,आठम,दसम आदि पाँतीमे काफिया 'देल' आ 'भेल' सँ मिलैत-जुलैत शब्द हेबाक चाही । एकर संगहि सभ पाँतीमे मात्रा क्रम 22222221 रहबाक चाही । जेना

मुइला बहुतो जन महगीसँ

आ हुनकर वेतन बढ़ि गेल
उपरोक्त दुनू पाँतीमे सेहो मात्रा क्रम अछि :22222221

अहिना सभ शेरमे समान मात्रा क्रम रखैत काफियाक लेल खेल जेल / तेल राखि गजल पूर्ण कएल जा सकैत अछि । /

आब एकटा दोसर गजलक पहिल शेर देखल जाए :

अपनअपन लाचारी छै-
दुख सबहक बड़ भारी छै

एहिमे दुनू पाँतीक अंतिम शब्द 'छै' अछि । यैह 'छै' रदीफ अछि । दुनू पाँतीमे 'छै' सँ पहिने 'आ' मात्राक संग 'री' अक्षरबला शब्द अछि, ई काफिया भेल । आब दोसर,तेसर,चारिम,पांचम शेरक दोसर पांतीमे रदीफ 'छै' रहबाक चाही और 'आ' उच्चारणक संग री' अक्षर बला शब्दक काफिया हेबाक चाही जेना सरकारी उधारी / अनारी / सबारी / : आदि । आब एहि शेरमे बहर देखू

अपन) अपन लाचारी छै-12-12-2222)
दुख सबहक बड भारी छै)222-2222)

पहिल पाँतिक मात्रा क्रम अछि :12-12-22-22 एहिमे दूटा लघु छै)1-1) जकरा एक दीर्घ)2) मानल जा सकैत अछि । तखन एकरो मात्रा क्रम 222-2222 भ' जाएत । अहिना शेष सभ शेरक दूनू पाँतीमे मात्राक्रम 222-2222 रखैत गजल पूर्ण कएल जा सकैत अछि।

8. मैथिलीमे 'ग' आ 'ज' आदिमे नुक्ता नहि लगैत छैक, तें मैथिलीमे गजल शब्दमे 'ग' आ 'ज' मे नुक्ता नै देल जाइ छै ।

9. गजलमे अर्द्धविराम अथवा विरामक उपयोग नै होइत अछि ।-

10. गजलक कोनो शीर्षक नहि रहैत अछि ।

11.पत्रिका सभमे गजलकें गजल जकाँ छापल जेबाक चाही, कविता जकाँ नहि । दूटा शेरक बीच स्थान रहबाक चाही ।

12. बहरक नाम अथवा मात्राक्रमक उल्लेख रहबाक चाही ।

13.अनुभवी लोक सभक कहब छन्हि जे शब्द सबहक संग किछु दिन खेलाइतधुपाइत एहेन स्थिति अबैत छैक-, जे जे पाँती मोनमे उतरैत छै सभ बहरमे रहैत छै ।

निम्नलिखित गजल सभमे आवश्यक तत्वक उपस्थितिक समीक्षा कयल जा सकैत अछि ।

(1)

दूभि और धान छी अहाँ
पान आ मखान छी अहाँ

कूदिफानि थाकि गेल छी-
दूर आसमान छी अहाँ

बेरबेर गाबि देखलौं-
वेद आ पुराण छी अहाँ

भोरकेर सूर्य छी अहीं
रातिकेर चान छी अहाँ

पैघपैघ बात मोनमे-
एकटा निदान छी अहाँ

आँखि मूँह कान छी अहीं
देह हम परान छी अहाँ

एहि गजलमे)i) रदीफ़ अछि 'छी अहाँ'

(ii) पहिल शेरक दुनू पांति आ शेष सभ शेरक दोसर पांतिमे काफिया अछि 'आ' ध्वनिक संग 'न' / 'ण' वर्णसँ अन्त बला शब्द धान, मखान,आसमान,पुराण,चान,निदान,परान ।

(iii) बहर अर्थात मात्राक्रम अछि 21-21-21-21-2

2.

आनन्दित राखय जे सदिखन से रस्ता नहि देखल छल
दुखमे सुख छै सुखमे दुख छै से हमरा नहि बूझल छल

नीके सोची नीके बाजी नीके देखी से सिखलौं
नीकक फल नीके नहि होइछ से दुनियाँमे सूनल छल

हमरा भाग्यक निरमाता दोसर नै क्यो अपनहि छी हम
जै पोखरिमे डूबल छी से अपनहि हाथें खूनल छल

ध्यानी ग्यानी आ विज्ञानी केलनि लोकेलय सभटा
से सभटा पौलक जीवनमे जे जै खातिर भूखल छल

जैलय सदिखन झगड़ाझाँटी- से गाछी हमरो सबहक
किछु हमरो सबहक रोपल अछि किछु बाबाके रोपल छल

अपने चुनलौं हम अपनालय आमक टिकुला सन जीवन
सीखै छी सभदिन किछु नवनव जे पहिने नहि सीखल- छल

एहि गजलमे-

(i) रदीफ़ अछि 'छल'

(ii) पहिल शेरक दुनू पाँती आ शेष सभ शेरक दोसर पाँतीमे काफिया अछि 'अ' ध्वनिक संग 'ल' वर्णसँ अन्त बला शब्द सभ / देखल - सीखल । / रोपल / खूनल भूखल / सूनल / बूझल

(iii) बहर अर्थात मात्राक्रम अछि 2222 2222 2222 222

3.

कखनो लाठी कखनो भाला कखनो तीरकमान गजल-
कखनो लागय ईंटापाथर- कखनो पानमखान गजल-

कखनो खुरपी कुडहरि खंती ऊखड़ि और समाठ बनल
कखनो बाड़ी कखनो गाछी कखनो भेल मचान गजल

कखनो आङनमे अरिपनसन- कखनो नारपुआर जकाँ-
कखनो बाढ़नि कखनो चालनि कखनो सूप समान गजल

कखनो गामक चौबटिया लग मंदिर और इनार जकाँ
आ कखनो सीमापर लडइत देशक वीर जवान गजल

कखनो मौनी आ पौतीमे साँठल जीरमरीच- जकाँ
कखनो कोसीमे हलचल आ छटपट कोटि परान गजल

किनको खातिर मुरही कचरी जामुन आम लताम 'अनिल'
हमरा खातिर दीयाबाती छठि आ देवउठान- गजल

एहि गजलमे)i) रदीफ़ अछि 'गजल'

(ii) पहिल शेरक दुनू पांति आ शेष सभ शेरक दोसर पांतिमे काफिया अछि 'आ' ध्वनिक संग 'न' वर्णसँ अन्त बला शब्द :

कमान उठान । / परान / जवान / समान / मचान / मखान /

(iii) बहर अर्थात सभ पाँतीमे मात्राक्रम अछि :2222- 2222 - 22-21-121-12

(iv) एहिमे दू टा लघु)1-1) क बदला एक दीर्घ)2) सेहो लीखल जा सकैत अछि । तखन मात्राक्रम भ' जाएत 2222 2222 2222 222

(v) एहि गजलक अंतिम शेरमे गजलकारक नाम अछि । एहि अंतिम शेरकें मकता कहल जाइत अछि ।
4.

तामझाम- आ तड़कभड़क- चलिते रहलै
अहंकार नव कीर्तिमान गढ़िते रहलै

छिति जल पावक गगन पवन सभ ठाँ धूआँ
ऐ दुरदिनमे सभकें सभ ठकिते रहलै

ख़तम ने कहियो भेल महाभारत जगमे
पाण्डव आ कौरवक युद्ध चलिते रहलै

जकर पसेनासँ होइए धरती हरियर
से हकन्न अहिना सभ दिन कनिते रहलै

महिषासुरके भेष मात्र बदलैत रहल
नयनसँ नोरो निरभयाक झड़िते रहलै

लाल किला तँ सभदिन ताल ठोकैत रहल
जन्तरमन्तरपर- धरना पड़िते रहलै

काँपय धरती नव नव असली रावणसँ
नकली रावण त सभ साल जरिते रहलै

एहि गजलमे)i) रदीफ़ अछि 'रहलै'

(ii) पहिल शेरक दुनू पाँती आ शेष सभ शेरक दोसर पाँतीमे काफिया अछि 'इ' ध्वनिक संग 'ते' सँ अन्त बला शब्द सभ --------- चलिते / जरिते । / पड़िते / झड़िते / कनिते / चलिते / ठकिते / गढिते

(iii) बहर अर्थात मात्राक्रम अछि 2222 2222 222

(iv)दू टा अलगअलग लघुकें एकटा दीर्घ मानल गेल अछि ।-

(v)तेसर शेरक पहिल पाँतिक अंतिम दीर्घक गिनती लघुमे भेल अछि ।
(vi)अंतिम शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघुक गिनती दीर्घमे कएल गेल अछि ।
(5)

माछ-दही जतरा लय की
ई दुनिया ककरा लय की

जे दै छै देबे करतै
नै कहतै हमरा लय की

किछु बाजत आ नठि जायत
बिपटा आ लबरा लय की

कतहु बैसिकय खा लेतै
ठाँ-पीढ़ी बगड़ा लय की

एके ठाँ सुतबो करतै
मारि-गारि झगड़ा लय की

देशक खातिर लड़ू-मरू
भैयारी बखरा लय की

दुनियाँलय फगुआ आ ईद
बकरी आ बकरा लय की

अहाँ भोज कय नाम करू
जे मुइलै तकरा लय की

एहि गजलमे)i) रदीफ अछि 'की'

(ii) पहिल शेरक दुनू पाँति आ शेष सभ शेरक दोसर पाँतिमे काफिया अछि 'अ' ध्वनिक संग 'रालय' सँ अन्त बला शब्द सभ । (iii) बहर अर्थात मात्राक्रम अछि 2222 222

(iv)दू टा अलगअलग लघुकें एकटा दीर्घ मानल गेल अछि ।-

(6)

नक्षत्र-ग्रहक फेरमे पड़बाक काज नै छै
भदबा आ दिगशूल सँ डरबाक काज नै छै

सभ शास्त्र आ पुराणक अमृत बचाक' राखू
तन-मनमे थाल-कादो भरबाक काज नै छै

सभ थिकाह अपने सदिखन से ध्यान राखी
नामपर जाति-धर्मक लड़बाक काज नै छै

परमातमाक संतति अहीं देवता आ देवी
धन लेल मारबाक आ मरबाक काज नै छै

पावन ई भूमि मिथिला ई मैथिलीक नैहर
एहि ठाँ कोनो मोकदिमा करबाक काज नै छै

तप त्याग और शीलक संस्कार अछि जरूरी
ई स्वर्ण वस्त्र भोज और मड़बाक काज नै छै

विष थीक मांस-मदिरा पापड़ अँचार चिन्नी
तिलकोर केर तड़ुआ तड़बाक काज नै छै

शब्दक नशामे भेटत आनन्दकेर खजाना
संगति शराब भाङक धरबाक काज नै छै

ज्ञानेक गंग-धारा तन-मन करैछ पावन
थिक आगि भय आ चिन्ता जरबाक काज नै छै

एहि गजलमे)i) रदीफ अछि 'काज नै छै'

(ii) काफियाबला शब्द सभ अछि जकर अन्तमे 'अ' उच्चारणक संग 'रबाक' अथवा 'ड़बाक' वर्ण / डरबाक / पड़बाक : समूह अछि- / तरबाक / मडबाक / करबाक / मरबाक / लड़बाक / भरबाक जरबाक । / धरबाक

(iii) बहर अछि सरल वार्णिक बहर :, प्रत्येक पाँतिमे वर्णक संख्या अछि :17

उपरोक्त सभ उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे व्याकरणसम्मत मैथिली - गजल कहबाक मार्ग सामान्य अछि, जटिल नहि।

मुन्नाजी

1

बाल गजलः पुरान देहक नव चेहरा

घड़ीक पेण्डुलम सन झुलैत जिनगीमे स्थिरता भागल फिरैए। ने देह स्थिर आ ने चित्त। केखनो क' तँ अपनो ठर-ठेकान हेराएल सन लगैए लोककेँ। जँ चिन्तनशील भ' ताकब तँ ठकाएल सन अनुभव हएत। एहन स्थितिमे कोनो नव सोच वा नव अवधारणाकेँ घीचा-तीरीमे फँसि जेबाक आशंका घेरि लैए। मुदा रक्षात्मको भ' वएह नव अवधारणा, नव प्रयोग, नव रचना साहित्यकेँ जिया क' रखबाक क्षमता देखबैए।
पद्य विधाक एकटा रूप गजल अपन आ समाजक सौन्दर्यबोध करबैए। हासिक, रसिक भ' प्रेममे ओझरा उब-डुब करैत अपन बाट पर ससरल जाइत देखाइए। गजलक बढ़ैत लोकप्रियता आब अपन विस्तार तकैए। आब गजल सभ भावमे चतरल-पसरल जा रहल अछि। ऐ बीच चर्चित युवा गजलकार आशीष अनचिन्हार जी गजलक क्षेत्रमे एकटा नव अवधारणा रखलन्हि। साहित्य अकादेमी आ मैलोरंगक संयुक्त तत्वावधानमे भेल कथा गोष्ठी 24 मार्च 2012केँ अनचिन्हार जी बाल गजलक अवधारणाकेँ स्पष्ट करैत कहलन्हि " जेना गद्य विधा वा अन्य विधामे बाल साहित्य लिखल जाइत अछि तहिना गजलमे सेहो बाल मनोविज्ञान पर आधारित बाल गजल लिखल जाए"।24 मार्च 2012 के प्रस्तुत कएल गेल बाल गजलक परिकल्पनाक विधिवत् घोषणा अनचिन्हार आखर आ विदेहक फेसबुक वर्सन पर 27 मार्च 2012केँ होइते बहुत रास परिपक्व बाल गजल सभ सोंझा आएल। घोषणा होइते ऐ विधाक पहिल रचनाकार भेलाह आशुतोष मिश्रा जे की नेपालसँ छथि मुदा यदा-कदा लिखैत छथि। दोसर स्थान पर भेलाह जगदानंद झा मनु आ तकरा बाद तँ अमित मिश्रा, रुबी झा, नवल श्री पंकज, चंदन झा, मिहिर झा, मुन्ना जी आ आन गजलकार सभहँक बाल गजलक प्रकाशनक क्रम बनि गेल। आ ऐँ तरहेँ ऐ अवधारणाक प्रथमे चरण ठोस भ' सोंझा आएल , जाहिसँ एकर मजगूत भविष्यक आकलन कएल जा सकैए। संगे एकर पूर्ण संभावना सेहो जागल

देखाइए।

अनचिन्हार आखर द्वारा बाल गजलक महत्वकेँ देखैत " गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान" अलगसँ देबाक घोषणा सेहो कएल गेल। आ ई मार्च माससँ प्रभावी मानल गेल। आ श्रीमती प्रिती ठाकुर जीकेँ मुख्यचयनकर्ती बनाएल गेल। एखन धरि जून मास धरिक प्रारंभिक चरणक चयन भेल अछि जे एना अछि-----------------
1) मार्च लेल श्री मती रूबी झा जीकेँ चूनल गेल।
2) अप्रैल लेल नवलश्री पंकज जीकेँ चूनल गेल।
3) मइ लेल अमित मिश्रा जीकेँ चूनल गेल।
4) जून लेल चंदन झा जीकेँ चूनल गेल।
संप्रति विदेह द्वारा प्रस्तुत बाल गजल विशेषांक एकर आधारकेँ मजगूत करबाक दिशामे एकटा सशक्त प्रयास अछि जाहिसँ एकर विकासक संभावना अक्षुण्ण रहए।

